नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 066
दि. 08.12.2025,
सोमवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : JIGNESHKUMAR PETHABHAI VAGHELA Regd. Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Centre, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad-382 424, Gujarat, India.

Phone : 76983 33307 (M) 84859 51747, 70963 33307 ● Email : navsarjansanskruti2016@gmail.com ● Email : navsarjansanskruti2016@yahoo.com ● Website : www.navsarjansanskruti.com

लद्दाख की चोटियों पर सुरक्षा की नई गूंज: श्योक टनल खुलते ही सेना की राह हुई आसान, हर मौसम में अब निर्बाध पहुँच

(जीएनएस)। पूर्वी लद्दाख की बर्फीली घाटियों में अक्सर सन्नाटा सिर्फ हवा ही नहीं बनाती थी, बल्कि उन पहाड़ी दर्रों की बंद पड़ी सड़कें भी बनाती थीं, जो सर्दियों में दिनों-दिन नहीं, हफ्तों-हफ्तों तक सफेद दीवारों में बदल जाती थीं। हिमस्खलन के डर से रास्ते बंद, संचार सीमित, और सप्लाई लाइनें बाधित—ये सब इस ऊँचाई पर तैनात भारतीय सैनिकों की दैनिक चुनौती का हिस्सा थे। लेकिन रविवार को 12 हजार फीट की ऊँचाई पर बनी रणनीतिक श्योक टनल के उद्घाटन के साथ इस मुश्किल जीवन में एक निर्णायक मोड़ आ गया है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह द्वारा सेना को समर्पित यह टनल अब LAC के सबसे कठिन इलाकों में भी लगातार कनेक्टिविटी सुनिश्चित करेगी।

दर्बुक-श्योक-दौलत बेग ओल्डी रोड पर स्थित यह सुरंग, जिसे बीआरओ ने बेहद कठिन परिस्थितियों में बनाया है, पूर्वी लद्दाख की सबसे महत्त्वपूर्ण लॉजिस्टिक लाइफलाइन बनकर उभरी है। श्योक नदी के किनारे जहाँ पहले अचानक बर्फ गिरने से सड़कें गायब हो जाती थीं, अब वही रास्ता साल के हर महीने खुला रहेगा। डेपसांग और DBO सेक्टर तक सैनिकों, उपकरणों, गोला-बारूद और भोजन की सप्लाई इतनी सुगमता से पहुँचेगी कि ऑपरेशनों का पूरा स्वरूप बदल जाएगा।

रक्षा मंत्री ने उद्घाटन के दौरान साफ कहा कि सेना की तेज़गतिशील क्षमता ही आधुनिक युद्ध का आधार है, और श्योक टनल जैसी परियोजनाएँ इस क्षमता को कई गुना बढ़ाती हैं। उन्होंने हाल ही में सफल रहे ऑपरेशन सिन्दूर का ज़िक्र करते हुए यह भी बताया कि यदि रियल-टाइम कम्युनिकेशन, मजबूत सड़क नेटवर्क और सुरक्षित आपूर्ति लाइनें न होतीं, तो यह अभियान अपने लक्ष्य को इतनी सटीकता से प्राप्त नहीं कर पाता।

टनल के operational होते ही अब वह खतरा भी लगभग समाप्त हो गया है जब बर्फबारी से रास्ते बंद होने पर सेना को इंतजार करना पड़ता था। शून्य से नीचे जाने वाले तापमान में हीटर, ईंधन, गोला-बारूद, दवाएं और राशन पहुँचाने में होने वाली देरी के कारण ऑपरेशनों की गति पर भी असर पड़ता था। अब यह पूरा क्षेत्र हर मौसम में जोड़कर रखने वाली एक स्थायी और सुरक्षित सुरंग से लैस हो चुका है।

रक्षा मंत्री ने बीआरओ की सराहना करते हुए कहा कि सीमा क्षेत्रों में सड़कें, पुल, ऑप्टिकल फाइबर कम्युनिकेशन, ड्रोन सपोर्ट, आधुनिक रडार और सर्विलांस नेटवर्क सेना के लिए सुरक्षा कवच की तरह हैं। इनके बिना ऊँचाई वाले इलाकों में तैनाती आधी रह जाती। उन्होंने यह भी बताया कि लद्दाख में हाल ही में लगाया गया 200 किलोवाट क्षमता वाला ग्रीन हाइड्रोजन माइक्रोग्रिड प्लांट ऊर्जा के क्षेत्र में एक बड़ी छलांग है और इन दूरदराज इलाकों के लिए पर्यावरण-अनुकूल ऊर्जा का नया अध्याय खोलेगा। बीआरओ द्वारा सीमावर्ती इलाकों में तेज़ी से बन रहे पुल, सड़के और टनलें आज केवल सैन्य रणनीति को ही मजबूत नहीं कर रहीं, बल्कि स्थानीय नागरिकों के जीवन में भी नई रोशनी भर रही हैं। जहाँ कभी घंटों-घंटों में तय होने वाली दूरी पर निर्भर था जीवन, वहीं अब मिनटों की कनेक्टिविटी उपलब्ध है।

श्योक टनल के साथ यह संदेश भी साफ है कि भारत अपने सीमावर्ती ढांचों को अब सिर्फ सुरक्षा की दृष्टि से नहीं, बल्कि गति, तकनीक और भविष्य की लड़ाईयों की जरूरतों को ध्यान में रखकर तैयार कर रहा है। हर मौसम में खुला यह नया मार्ग सिर्फ एक सुरंग नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा का वह मजबूत स्तंभ है, जिस पर पूर्वी लद्दाख का पूरा रणनीतिक तंत्र टिका रहेगा।

गोवा के अर्पोरा में नाइट क्लब बना श्मशान, सिलेंडर धमाके ने छीनी 23 जानें

(जीएनएस)। उत्तर गोवा का अर्पोरा इलाका, जो सामान्य दिनों में अपने नाइटलाइफ़ और पर्यटकों की रौनक के लिए जाना जाता है, गुरुवार देर रात दर्दनाक चीखों और दहशत भरे नज़ारों में बदल गया। एक व्यस्त नाइट क्लब में अचानक हुए सिलेंडर विस्फोट ने कुछ ही मिनटों में आग का भयानक रूप ले लिया और पूरा परिसर आग की लपटों से घिर गया। इस दर्दनाक हादसे में क्लब के 23 कर्मचारी जिंदा जल गए। पुलिस के अनुसार, सभी मृतक स्टाफ सदस्य थे जिन्होंने भागने की कोशिश की, लेकिन तेज़ी से फैलती आग ने उन्हें मौका नहीं दिया। सौभाग्य से किसी पर्यटक के हताहत होने की पुष्टि नहीं हुई, लेकिन यह त्रासदी गोवा के पर्यटन तंत्र और सुरक्षा व्यवस्थाओं पर गंभीर सवाल खड़े करती है। रात करीब ढाई बजे जब अधिकतर क्लब अपने चरम पर होते हैं, तभी रसोई क्षेत्र में रखे गैस सिलेंडरों में अचानक तेज़ धमाका हुआ। धमाके की आवाज़ आसपास के इलाकों तक सुनाई दी और कुछ ही सेकंड में आग क्लब के मुख्य हिस्सों तक फैल गई। चारों ओर धुआँ भर गया और भगदड़ मच गई। बाहर से देखने

वालों को समझ ही नहीं आया कि भीतर जो लोग थे, वे धुएँ और लपटों के बीच फँस चुके हैं। पुलिस महानिदेशक आलोक कुमार ने बताया कि राहत और बचाव दलों ने घंटों की मशक्कत के बाद 23 शवों को बाहर निकाला। कई शव इतने badly charred थे कि पहचान मुश्किल हो रही है। देर रात से जारी सर्च ऑपरेशन में अधिकारियों का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि कहीं कोई और व्यक्ति अंदर न फँसा हो।

हादसे की सूचना मिलते ही मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत और स्थानीय विधायक माइकल लोबो मौके पर पहुँचे। मुख्यमंत्री ने इस घटना को "गोवा के लिए शर्मनाक और बेहद दर्दनाक" बताया और यह भी स्वीकार किया कि शुरुआती जांच में कई महत्वपूर्ण सुरक्षा मानकों की अनदेखी सामने आई है। क्लब के भीतर पर्याप्त फायर सेफ्टी सिस्टम नहीं था, आपातकालीन निकासों की स्थिति संदिग्ध थी, और कई कर्मचारियों का दावा है कि सिलेंडरों का नियमित निरीक्षण महीनों से नहीं हुआ था। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट कहा कि यदि लापरवाही साबित होती है तो क्लब के मालिकों और प्रबंधकों के खिलाफ कठोरतम कार्रवाई की जाएगी। दूसरी ओर, दमकल विभाग और पुलिस की संयुक्त टीम इस बात की तह तक जाने में जुटी है कि आखिर विस्फोट की मूल वजह क्या थी। विशेषज्ञों का कहना है कि यह या तो लीक होते सिलेंडर की वजह से हुआ, या फिर रसोई क्षेत्र में किसी इलेक्ट्रिक फॉल्ट ने गैस को आग पकड़ने का मौका दिया। यह भी संदेह है कि क्लब ने क्षमता से अधिक सिलेंडर अनधिकृत रूप से संग्रहित कर रखे थे, जिससे दुर्घटना की तीव्रता बढ़ गई।

स्थानीय लोगों का कहना है कि पिछले कुछ महीनों से अर्पोरा और कलंगुट क्षेत्र में कई नाइट क्लब सुरक्षा नियमों की धज्जियाँ उड़ाते हुए चल रहे हैं, लेकिन निरीक्षण एजेंसियाँ कठोरता से निगरानी नहीं करतीं। इस भयावह हादसे ने प्रशासन को झकझोर दिया है और संभव है कि आने वाले दिनों में पूरे राज्य के मनोरंजन स्थलों की व्यापक जांच शुरू हो।

अर्पोरा का यह हादसा केवल 23 परिवारों के उजड़ने की कहानी नहीं है, बल्कि यह याद दिलाने वाली चेतावनी भी है कि मनोरंजन और पर्यटन की चमक के पीछे यदि सुरक्षा को नज़रअंदाज़ किया जाए तो उसका परिणाम कितनी बड़ी त्रासदी में बदल सकता है। गोवा सरकार अब इस घटना को सबक की तरह लेकर पूरे नाइटलाइफ़ सेक्टर में सुरक्षा मानकों को कड़ा करने की तैयारी कर रही है, लेकिन फिलहाल अर्पोरा की हवा में अब भी धुएँ की गंध और उन 23 जिंदगियों की चुप्पी बसी हुई है, जो उस रात घर नहीं लौट पाईं।

पूर्वी भारत की रफ्तार बदलने वाला मार्ग: रायपुर–विशाखापत्तनम इकोनॉमिक कॉरिडोर 2026 तक पूरा, 12 घंटे का सफर अब 5 घंटे में

(जीएनएस)। नई दिल्ली। देश के बुनियादी ढांचे में हो रहे बड़े बदलावों में अब एक और मील का पत्थर जुड़ने वाला है। रायपुर–विशाखापत्तनम इकोनॉमिक कॉरिडोर, जिसे पूर्वी भारत की अर्थव्यवस्था की नई रीढ़ कहा जा रहा है, दिसंबर 2026 तक पूरी तरह तैयार हो जाएगा। यह सिर्फ एक सड़क परियोजना नहीं, बल्कि छत्तीसगढ़, ओडिशा और आंध्र प्रदेश के औद्योगिक, सामाजिक और सांस्कृतिक ताने-बाने को नया रूप देने वाली ऐतिहासिक पहल है। वर्तमान में रायपुर से विशाखापत्तनम की सड़क दूरी 597 किलोमीटर है, जिसे इस ग्रीनफील्ड 6-लेन हाईवे के बनते ही घटाकर 465 किलोमीटर कर दिया जाएगा। इससे यात्रा समय सीधे 12 घंटे से कम होकर केवल 5 घंटे रह जाएगा। राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (NHAI) इस मार्ग को 16,482 करोड़ रुपये की लागत से पीएम गतिशक्ति योजना के तहत बना रहा है। एक्सेस-कंट्रोल तकनीक और 100 किमी/घंटा की डिज़ाइन स्पीड वाला यह कॉरिडोर आधुनिक भारत के हाई-स्पीड कनेक्टिविटी विज़न का बड़ा उदाहरण माना जा रहा है।

औद्योगिक क्षेत्रों को इस कॉरिडोर से सबसे बड़ा लाभ मिलेगा। छत्तीसगढ़ और ओडिशा के औद्योगिक क्लस्टर अब विशाखापत्तनम पोर्ट से सीधे तौर पर जुड़ जाएंगे, जिससे निर्यात क्षमता बढ़ेगी, लॉजिस्टिक लागत घटेगी और कोल-स्टील आधारित उद्योगों की सप्लाई चेन मजबूत होगी। मंत्रालय के अनुसार, यह परियोजना मौजूदा NH-26 के भारी ट्रैफिक बोझ को भी काफी कम कर देगी, जिससे सड़क सुरक्षा और परिवहन गति दोनों सुधरेंगे।

परियोजना का असर सिर्फ औद्योगिक क्षेत्रों तक सीमित नहीं है; जमीन और स्थानीय अर्थव्यवस्था में इसका प्रभाव अब स्पष्ट दिखने लगा है। विजयनगरम में जमीनों की कीमतें रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गई हैं—15 लाख रुपये प्रति एकड़ से बढ़कर 1.5 करोड़ रुपये तक। जमींदारों और किसानों का कहना है कि यह विकास उनके जीवन की दिशा बदल देगा। जामी गांव के श्रीनिवासुलु बताते हैं, "हमने जमीन दी, लेकिन बदले में केवल मुआवज़ा नहीं मिला—हमारी बची जमीन की कीमत ही कई गुना बढ़ गई है। यह हमारे लिए अवसरों का नया दरवाज़ा है।"

ट्रांसपोर्ट क्षेत्र के लिए यह कॉरिडोर राहत लेकर आएगा। ट्रांसपोर्टरों का कहना है कि यात्रा समय घटने से डीज़ल की बचत होगी, वाहन कम खराब होंगे और एक ही ट्रक से पहले से कहीं ज्यादा ट्रिप संभव होंगे। एक स्थानीय ट्रांसपोर्टर ने कहा कि "जो सफर पहले डेढ़ दिन लेता था, वह अब एक दिन में निपट जाएगा। इससे हमारा पूरा बिज़नेस मॉडल बदल जाएगा।"

यह परियोजना आदिवासी क्षेत्रों के विकास को भी तेज करेगी। धमतरी, कांकेर, केशकाल, नबरंगपुर, कोरापुट और अराकू जैसे दूरदराज़ के इलाके अब बेहतर सड़क कनेक्टिविटी से सीधे रायपुर और विशाखापत्तनम की मुख्यधारा से जुड़ जाएंगे। इससे शिक्षा, स्वास्थ्य, उद्योग, पर्यटन और रोजगार के अवसर कई गुना बढ़ेंगे। सरकार का मानना है कि यह कॉरिडोर सामाजिक-आर्थिक विकास में वह भूमिका निभाएगा, जिसे दशकों से इन क्षेत्रों को हासिल नहीं हो पाई थी।

फिलहाल परियोजना के 15 पैकेजों में निर्माण युद्धस्तर पर चल रहा है। सरकार इसे पूर्वी भारत की सबसे परिवर्तनकारी परियोजनाओं में एक मान रही है—एक ऐसा मार्ग जो केवल शहरों को नहीं, बल्कि पूरे क्षेत्र की नियति को जोड़ने वाला साबित होगा।

एजियन सागर में फिर त्रासदी, प्रवासियों से भरी नाव डूबने से 17 की मौत; दो लोग जीवित निकाले गए

(जीएनएस)। ग्रीस के तट के पास एक बार फिर समुद्री त्रासदी ने दस्तक दी, जब शनिवार शाम प्रवासियों को लेकर जा रही एक नाव अचानक समुद्र में डूब गई। शांत लगने वाले पानी में डूबती नाव को किसी ने पहली बार तब देखा, जब वह आधी जलमग्न अवस्था में जूझ रही थी और उसके भीतर सवार लोग अंधेरे और लहरों के बीच अपनी ज़िंदगी बचाने की कोशिश कर रहे थे। दुर्घटना में कुल 17 लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि केवल दो लोगों को जीवित निकाला जा सका। दोनों को तुरंत अस्पताल ले जाया गया, जहां उनका उपचार जारी है। ग्रीस के समुद्री मामलों के मंत्रालय ने बताया कि दुर्घटना की पहली सूचना तुर्किये के एक कार्गो जहाज के चालक दल ने दी। यह जहाज क्रीट के दक्षिण-पश्चिम में लगभग 30 नॉटिकल मील की दूरी पर था, जब उसके चालक दल ने समुद्र में डोलती, आधी डूबी हुई नाव को देखा। जहाज ने तुरंत ग्रीक कोस्ट गार्ड को अलर्ट भेजा, जिसके बाद बचाव अभियान शुरू हुआ। रात के समय तेज़ हवाओं और अस्थिर समुद्री परिस्थितियों ने बचाव कार्य को और चुनौतीपूर्ण बना दिया, लेकिन तटरक्षक दल की टीम घटनास्थल तक पहुंची और खोज अभियान चलाया।

प्रारंभिक जानकारी में कोस्ट गार्ड ने 18 शव मिलने की बात कही थी, लेकिन बाद में जीवित बचे दोनों लोगों के बयान से स्पष्ट हुआ कि नाव में कुल 17 लोग ही सवार थे। दोनों बचे हुए यात्रियों ने बताया कि नाव छोटी थी और क्षमता से कहीं अधिक लोगों को बैठाया गया था। ऐसा अनुमान है कि नाव समुद्र में प्रवेश करने से पहले ही अत्यधिक भार के कारण अस्थिर थी, और तेज़ी से उठती लहरों ने इसे पलट दिया।

यह घटना यूरोप की ओर खतरनाक समुद्री मार्गों से हो रहे प्रवासी प्रयासों की गंभीरता को फिर सामने लाती है। बेहतर जीवन, सुरक्षित भविष्य और संघर्ष से दूर शरण पाने की चाह में लोग बार-बार इन जानलेवा यात्राओं का रास्ता चुनते हैं, जिनमें से कई यात्रा पूरी होने से पहले ही समुद्र की गहराइयों में समा जाती हैं। ग्रीस के लिए यह हादसा कोई नया अनुभव नहीं है—समुद्री सीमा पर ऐसी घटनाएँ वर्षों से सामने आती रही हैं, लेकिन 2023 की भयावह दुर्घटना अब भी यादों में ताज़ा है, जब एड्रियाना नामक मछली पकड़ने वाली नाव दक्षिणी ग्रीस के तट पर डूब गई थी और एक ही रात में सैकड़ों प्रवासियों की जान चली गई थी।

नई घटना ने यूरोपीय संघ, तुर्किये और ग्रीस के लिए प्रवासियों की तस्करी रोकने वाली नीतियों की विफलताओं पर फिर सवाल खड़े कर दिए हैं। सुरक्षा बलों का कहना है कि तस्करों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली नावें अक्सर जर्जर होती हैं, क्षमता से अधिक लोगों को बैठाया जाता है और यात्रियों को जीवन रक्षक जैकेट तक नहीं दिए जाते। परिणामस्वरूप, समुद्र की थोड़ी-सी उथल-पुथल भी जानलेवा साबित होती है।

ग्रीक कोस्ट गार्ड ने घटना स्थल के आस-पास खोज अभियान जारी रखा है ताकि किसी संभावित जीवित व्यक्ति को खोजा जा सके। वहीं, अंतरराष्ट्रीय प्रवासी संगठनों ने फिर एक बार चेतावनी दी है कि जब तक सुरक्षित मार्ग और कानूनी प्रक्रियाएँ मजबूत नहीं होंगी, तब तक भूमध्य और एजियन सागर ऐसी त्रासदियों के गवाह बने रहेंगे।

मृतकों की पहचान अभी तक स्पष्ट नहीं है, लेकिन प्रारंभिक संकेतों के अनुसार वे एशिया या मध्य-पूर्व के देशों से आए प्रवासी हो सकते हैं, जो यूरोप में प्रवेश करने की कोशिश कर रहे थे। हादसा एक बार फिर मानव जीवन की संवेदनशीलता, तस्करी नेटवर्क की निर्दयता और सीमाओं को पार करने की मजबूरी जैसी कड़वी सच्चाइयों को सामने लाता है।

देशभर की वक्फ संपत्तियों का डिजिटल सफर पूरा, 'उम्मीद' पोर्टल पर 5.17 लाख रिकॉर्ड अपलोड होने के बाद प्रक्रिया समाप्त

(जीएनएस)। नई दिल्ली। देश में फैली वक्फ संपत्तियों के बिखरे हुए दस्तावेज़ों, दशकों पुराने रिकॉर्ड और प्रबंधन से जुड़ी पारदर्शिता की कमी को दूर करने के उद्देश्य से शुरू की गई डिजिटल पहल अब अपने पहले बड़े पड़ाव पर पहुँच गई है। केंद्र सरकार द्वारा शुरू किया गया 'उम्मीद' पोर्टल, जिसका मकसद देश की तमाम वक्फ संपत्तियों को एकीकृत डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म पर दर्ज करना था, अपनी निर्धारित छह महीने की अवधि पूरी होने के बाद बंद कर दिया गया है। छह महीनों के भीतर राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों से मिले अभूतपूर्व सहयोग और तेज़ी से हुए डेटा अपलोड ने इसे एक ऐसी उपलब्धि बना दिया है, जिसकी मिसाल वक्फ प्रबंधन के इतिहास में पहले कभी नहीं देखी गई। इस पोर्टल की शुरुआत 6 जून 2025 को अल्पसंख्यक कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने की थी। वक्फ अधिनियम, 1995 के प्रावधानों और उच्चतम न्यायालय के निर्देशों के तहत यह अनिवार्य किया गया था कि देश में मौजूद तमाम वक्फ संपत्तियों को प्रमाणित, सत्यापित और सार्वजनिक डिजिटल रिकॉर्ड के रूप में दर्ज किया जाए, ताकि प्रबंधन में पारदर्शिता बढ़े और अनियमितताओं पर रोक लग सके। छह महीनों में पोर्टल पर कुल 5,17,040 संपत्तियों का डेटा अपलोड किया गया। इनमें से 2,16,905 संपत्तियों को सत्यापन के बाद स्वीकृति दे दी गई, जबकि 2,13,941 संपत्तियाँ अभी प्रक्रियाधीन या प्रस्तुत स्थिति में हैं। इसके अलावा 10,869 संपत्तियों को अस्वीकृत या पुनःसत्यापन हेतु चिन्हित किया गया है।

यह आँकड़ा न केवल अपलोड की गति को दर्शाता है, बल्कि इस बात को भी रेखांकित करता है कि राज्यों ने इस अभियान को गंभीरता से अपनाया।

अंतिम दो महीनों में सबसे तेज़ी से डेटा अपलोड हुआ, जिसकी वजह मंत्रालय और राज्यों के बीच लगातार समन्वय, सचिव-स्तरीय हस्तक्षेप और देश के विभिन्न हिस्सों में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम रहे। अभियान के दौरान मंत्रालय के सचिव डॉ. चंद्रशेखर कुमार ने 20 से अधिक उच्चस्तरीय समीक्षा बैठकें कीं। इसके अतिरिक्त सात क्षेत्रीय संयोजन बैठकें, राज्यों में सैकड़ों प्रशिक्षण सत्र, और दिल्ली में दो दिवसीय मास्टर ट्रेनर वर्कशॉप आयोजित की गई, जिसके चलते स्थानीय स्तर पर भी कर्मचारियों और प्रबंधकों को पोर्टल के तकनीकी उपयोग की बेहतर समझ मिली। तकनीकी सहायता के लिए विशेष हेल्पलाइन ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसने अपलोड प्रक्रिया में आने वाली दिक़्क़तों को तत्काल दूर किया। पोर्टल का समय पूरा होने के साथ ही इसे बंद कर दिया गया है, लेकिन मंत्रालय का कहना है कि अपलोड किए गए रिकॉर्ड अब स्थायी डिजिटल डेटाबेस के रूप में संरक्षित रहेंगे, जिन्हें भविष्य की नीतियों, विवाद निपटान और संपत्ति प्रबंधन के लिए संदर्भ के रूप में उपयोग किया जाएगा। सरकार का मानना है कि वक्फ संपत्तियाँ देश की सामाजिक, शैक्षिक और धार्मिक गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और उनके डिजिटल प्रबंधन से भविष्य में पारदर्शिता, जवाबदेही और दक्षता सुनिश्चित होगी।

संपादकीय

महाकुंभ में घडियाल

शीतकालीन सत्र के दौरान कई महाकुंभ और कई घडियाल भी देखे गए। किसी का गुस्सा और किसी की आंखों का सुरमा निकल गया। सीमाओं के बाहर उत्साह को पहली बार देखा गया, लेकिन तपोवन क्या अब इंकलाब हो गया। कहना न होगा कि मौजूदा सियासत में आम आदमी का हाल बुरा हो गया। सदन का चरित्र सडक़ पर या अब सडक़ ही सदन तक आ गई। यह इसलिए कि सदन के बाहर तख्तियां पक्ष की थीं और विपक्ष की भी थीं, बस फर्क यह कि दोनों की निगाह एक दूसरे के खिलाफ खड़ी थी। नेता प्रतिपक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर का यह कौनसा मुकाबला राजस्व मंत्री जगत सिंह नेगी से होता रहा कि सदन की तहजीब बदल गई। राजनीति शास्त्र के किसी विद्यार्थी को क्या मिला या प्रदेश को ऐसा भी क्या गिला कि सदन के बाहर जोरावर स्टेडियम की गूंज आसमान बन गई। गुस्से की गीतांजलि में जोरावर स्टेडियम में नए गीत, नए नारे बताते हैं कि भाजपा करने पर उतर आए, तो कारवां बनाना जानती है। भाजपा ने कांग्रेस की तीन साल की हुकूमत को चिकोटी काटी है, अपनी शक्ति अपनी धरती बांटी है। वो सामने सत्ता का महल और इधर हमने भी दीये जलाए हैं। ईंधन बहुत है विपक्ष के पास, इसे साबित कर गई रैली। परिवार को एकछत्र भाजपा ने साझी छत के नीचे बैठाया, तो वे सारे चेहरे मिल गए जिन्हें अगले चुनाव की सूरत में छवि बनानी है। इसे आलोचना का महाकुंभ कहें, क्योंकि राष्ट्रीय स्तर पर बिहार की जीत पार्टी को गुदगुदाने लगी है। मंडी से कंगना रणौत की हाजिरी भले ही संसद में लगी, लेकिन प्रदेश से बाकी सभी सांसद विपक्ष के विरोध में अपनी भागीदारी का अक्स दिखाते रहे। वहां व्यक्तित्व के पहाड़, अस्तित्व के समुद्र और राज्य की उम्मीदों के दरबार सजे मिले।

बावजूद इसके हम भाजपा के किसी एक पहलवान का नाम नहीं ले सकते। सुनवाई सुक्खू सरकार की थी, इसलिए नेता प्रतिपक्ष सत्ता में आई कांग्रेस के हर व्यवहार को पकड़ते रहे। सारे विवाद एक तरफ, लेकिन मुर्गा बनाम दाल दूसरी तरफ। रैली की उमंगों में भाजपा की बांग सुनी, तो समोसे की एक टांग उछल गई। ठसाठस स्टेडियम में डा. राजीव बिंदल के संगठन की ताकत जब लहराई, तो नारेबाजों की जुबान शिखर से टकराई। बहुत सारे मुद्दे एकत्रित थे, सियासत के सारे घड़े भरे थे, इसलिए पानी पी-पी कर भाजपा ने कोसने का मंसूबा जाहिर रखा। वहां नारी संसार भारी था, तो गारंटियों में पंद्रह सौ का हक पूछा गया। कोसने में भाजपा ने कितना इत्र जाया किया, इससे इतर बात यह कि कांग्रेस अब नए प्रदेशाध्यक्ष की कमान में भाजपा के सामने कितना जोश भर पाती है। मंडी की प्रस्तावित रैली में तीन साल की सत्ता का सारांश और मिशन रिपीट के अगले दो साल कितना चलना चाहते हैं संकल्प, यह बताने की बारी है। भाजपा ने प्रश्नों की अंजुलि विधानसभा के भीतर और बाहर एक साथ भरी है। एक मुकदमा लोकतंत्र की आवाज और दूसरा जनता की आवाज में ढेरों प्रश्न पूछ रहा है। जमावड़ा विपक्ष का सदन के बाहर तक पहुंच गया, अब देखना यह है कि कांग्रेस के सिपाही कितना समय तक कदमताल करते हैं। जाहिर तौर पर इस बार केवल विधानसभा का शीतकालीन सत्र नहीं था, तपोवन परिसर के बहुत नजदीक कहने का हर क्षण, एक अवसर था। यह हिमाचल की लोकतांत्रिक छवि में इजाफा है कि यहां विपक्ष, सत्ता के सामने प्रदेश की माटी का कर्ज उतार कर पूछता है कि कितना उधार चुकाओगे, बतौर सरकार कितना फर्ज निभाओगे।

बाढ़ व सूखा संकट से रक्षा के अभिनव प्रयास

> “जल-संरक्षण उपाय बाढ़ व सूखे दोनों का संकट कम करने में बहुत उपयोगी भूमिका निभाते हैं व यदि इन्हें जल-धरोहर की रक्षा के रूप में अधिक प्रतिष्ठित किया जाए तो और भी बढ़ती संख्या में व अधिक उत्साह से लोग इन प्रयासों से जुड़ सकते हैं।

किसी भी क्षेत्र में बाढ़ या सूखे के संकट के पीछे अनेक कारक होते है। वर्षा बहुत होगी या कम, अचानक बहुत तेजी से बरसेगी या ऐन मौके पर रूठ जाएगी, इस पर लोगों का नियंत्रण नहीं है। पर इतना जरूर है कि वे यदि जल व मिट्टी संरक्षण के सतत प्रयास करते रहें तो यह दोनों ही संकट व उपजी क्षति को बहुत कम अवश्य किया जा सकता है।

यदि एक क्षेत्र के सैकड़ों गांव अपने प्राकृतिक वर्षा जल के बहाव के क्षेत्रों को गंदगी व अवरोधों से मुक्त रखते हैं व इनमें गड्ढे कर इनमें अधिक वर्षा के जल को रोक लेते हैं; चेक डैम आदि निर्माण करते हैं; अधिक वृक्षों व मेढ़बंदी से मिट्टी व पानी को रोकते हैं। तालाबों जैसे जलस्रोतों की नियमित सफाई कर इनकी वर्षा के जल ग्रहण करने की क्षमता को बनाए रखते हैं या बढ़ाते हैं तो इस क्षेत्र में अधिक वर्षा होने पर अधिकांश पानी भली-भांति समा जाएगा। इससे बाढ़ उत्पन्न करने की समस्या कम होगी। दूसरी ओर बाद के महीनों में जल संकट भी कम होगा क्योंकि विभिन्न स्रोतों से अधिक जल एकत्र हो चुका होगा। इस कारण जल-स्तर भी ठीक बना रहेगा, हैंडपंप व कुएं आदि में जल उपलब्ध रहेगा। इस तरह जल-स्रोतों व छोटी-बड़ी नदियों की रक्षा के अनुकूल भी स्थितियां उत्पन्न होंगी।

वहीं दूसरी ओर इन सभी कार्यों की उपेक्षा से मामूली वर्षा तेजी से बहुत सी मिट्टी को भी बहा ले जाएगी और बाढ़ का संकट उत्पन्न करेगी। दूसरी ओर चूंकि विभिन्न स्रोतों व भूजल के रूप में बहुत कम जल संरक्षित हुआ है, अतः मानसून के बाद के महीनों में जल-संकट उपस्थित हो जाएगा। सूख रहे तालाबों पर अतिक्रमण भी होने लगेगा। छोटी नदियां भी संकटग्रस्त हो जाएंगी।

अतः स्पष्ट है कि वर्षा की मात्रा, बांध, तटबंध आदि चर्चित कारकों से अलग आपदाओं से रक्षा में एक बड़ी भूमिका आम लोगों, विशेषकर

गांववासियों के जल-संरक्षण से जुड़े प्रयासों की है। जहां ये काम निरंतरता-निष्ठा व सूझबूझ से होंगे, वहां आपदाओं का प्रकोप भी कम हो सकेगा। मरखेड़ा गांव (जिला टीकमगढ़, मध्य प्रदेश) एक समय जल संकट से बहुत परेशान था। हैंडपंप, कुएं सभी स्रोतों में पानी बहुत कम मिल रहा था। पानी जुटाने में महिलाओं की कठिनाइयां बहुत बढ़ गई थीं। तब सामाजिक कार्यकर्ता मंगल सिंह ने उपाय सुझाया कि प्राकृतिक जल बहाव मार्ग में सावधानी से स्थान चुनकर निर्धारित गहराई व आकार के गड्ढे बना दिए जाएंगे तो भू-जल स्तर सुधारा जा सकता है। गांववासियों ने उत्साह से यही किया व जो मिट्टी खोदी गई उसका उपयोग मेढ़ बनाने में किया। इसका बहुत सार्थक परिणाम मिला तो गांववासियों ने टूट-फूट रहे चेक डैम की मरम्मत भी कर ली। बहुत सा वृक्षारोपण भी किया। अतः बहुत कम खर्च पर ही गांव का जल-संकट दूर करने में उल्लेखनीय सफलता मिली। कुछ किसानों की उत्पादकता 50 प्रतिशत तक बढ़ गई।

इसी राज्य के जल संकटग्रस्त नदना गांव (जिला शिवपुरी) में ढलानदार भूमि में वर्षा का जल और भी तेजी से बह जाता था और मिट्टी भी अधिक काटता था। खेती की उत्पादकता कम हो गई थी व प्रवासी मजदूरी पर निर्भरता बढ़ रही थी। यहां भी जल-संरक्षण के प्रयास आरंभ हुए व जल प्रवाह के नाले में लगभग 80 स्थानों पर गड्ढे बनाए गए। खेत-तालाब, गेवियन किस्म के चेक डैक बनाए गए। इससे भू-जल स्तर में बहुत सुधार हुआ, लोगों को कुओं व हैंडपंप में पर्याप्त पानी मिलने लगा। पशु-पक्षियों को जल-स्रोतों में वर्ष भर पर्याप्त पानी मिलने लगा। घास-चारा भी अधिक उपलब्ध होने लगा। कृषि उत्पादकता भी बढ़ी । भूमि कटाव रुका व मिट्टी की गुणवत्ता बेहतर हुई है।

राजस्थान के करौली जिले के मकनपुर स्वामी गांव में जल-संकट से त्रस्त गांववासियों के प्रयासों के बाद जब जल-स्रोतों की सफाई से प्राप्त उपजाऊ मिट्टी किसानों को उनके खेतों के लिए प्राप्त हुई तो पथरीली, खनन-प्रभावित भूमि पर भी फसल लहलहाने लगी।

इन विभिन्न गांवों में जल स्थिति को इन संरक्षण उपायों से सुधारा गया है तो जहां लोगों को राहत मिली, वहीं आपदाओं के संकट भी कम हुए हैं। इन सभी उदाहरणों में स्थिति सुधारने में सृजन संस्था के कार्यकर्ताओं व गांव समुदाय की भूमिका रही। इस तरह जल संबंधी समृद्ध स्थानीय जानकारी का भरपूर लाभ मिल सका। सृजन ने इन कार्यों में दक्षता प्राप्त अन्य संस्थाओं मसलन, समाज सेवा संस्थान, अरुणोदय व युवा कौशल विकास मंडल जैसी संस्थाओं के सहयोग से यह कार्य अनेक अन्य गांवों तक भी पहुंच सका।

विशेषकर बुंदेलखंड क्षेत्र में तालाबों की समृद्ध परंपरा रही है व इनसे जुड़ी स्थानीय परिस्थितियों को भली-भांति समझने वाली स्थानीय कुशलताएं भी मौजूद हैं। ए.बी.वी. इंस्टिच्यूट ऑफ गुड गवर्नेंस ने ऐसे लगभग 1100 तालाबों के बारे में जानकारी एकत्र की। यदि इनकी सफाई व मरम्मत के कार्य उचित समय पर होते रहे तो इनकी जल-संकट को दूर करने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका बनी रहेगी। साथ में अनुचित अतिक्रमणों से इनकी रक्षा करना भी आवश्यक है।

जल-संरक्षण को आगे बढ़ाने के कार्य को सृजन व इसके सहयोगियों ने जल-धरोहर या वाटर हैरीटेज की रक्षा के रूप में भी देखा है। जिस तरह सांस्कृतिक व ऐतिहासिक स्तर पर प्रायः धरोहर की रक्षा की चर्चा होती है, वैसे ही जल-धरोहर की रक्षा की सोच को आगे बढ़ाया गया है।

जन-भावनाएं विशेषकर नदियों की रक्षा से बहुत जुड़ी हैं। इसके बावजूद अनेक प्रतिकूल स्थितियों के कारण अनेक छोटी व सहायक नदियां संकटग्रस्त होती जा रही हैं। इनमें जल बहुत कम होने पर आसपास अतिक्रमण हो जाते हैं व बाद में पानी अधिक बरसने पर पानी की धारा अपना प्राकृतिक मार्ग ढूंढ़ती है तो बाढ़ आ जाती है। इस तरह जल-संरक्षण उपाय बाढ़ व सूखे दोनों का संकट कम करने में बहुत उपयोगी भूमिका निभाते हैं व यदि इन्हें जल-धरोहर की रक्षा के रूप में अधिक प्रतिष्ठित किया जाए तो और भी बढ़ती संख्या में व अधिक उत्साह से लोग इन प्रयासों से जुड़ सकते हैं।

प्रेरणा

“ईमानदारी का महाकुंभ”

जिला मुख्यालय में पहली बार “ईमानदारी का महाकुंभ” आयोजित होने वाला था। शहर में ऐसा उत्साह था मानो कोई पवित्र पर्व उतर आया हो। सड़क के दोनों ओर बड़े–बड़े झंडे लगे थे, जिन पर लिखा था—“ईमानदारी ही राष्ट्र की आत्मा है।” ठीक नीचे एक छोटे से कोने में प्रायोजक का नाम छपा था—“सहयोगी: मेघदूत इंफ्रा प्राइवेट लिमिटेड (जिस पर अभी इनकम टैक्स का छापा चला है)।” घोषणा पत्र का अंतिम वाक्य और भी रोचक था—“यह कार्यक्रम जनता के लिए निःशुल्क है, पर पार्किंग सशुल्क होगी।”

सुबह दस बजे से ही भीड़ जुटनी शुरू हो गई। लोग साफ़–सुथरे कपड़े पहनकर आए थे, क्योंकि ईमानदारी का कार्यक्रम था; दिखावे की तो ज़रूरत थी ही। प्रवेश द्वार इतना भव्य था कि किसी विवाह मंडप को मात दे दे। गेट के ऊपर मोटे अक्षरों में लिखा था—“स्वागत है सत्य के साधकों का।” गेट के नीचे खड़ा एक गार्ड हर आने वाले से टिकट माँग रहा था। किसी ने कहा—“अरे, यह तो निःशुल्क बताया था।” गार्ड ने कहा—“हां, पर ईमानदार लोग टिकट लेकर ही जाते हैं।” सबने मान लिया—आखिर ईमानदारी का महाकुंभ था, टिकट न लेना बेईमानी होती।

मंच पर मुख्य अतिथि, माननीय मंत्री महोदय, पहुँचे। उनके आते ही तालियों की गड़गड़ाहट ने पूरे पंडाल को हिला दिया। मंत्री जी के चेहरे पर वही पुराना आत्मविश्वास था जिसने उन्हें पिछले महीने ही अपनी चौथी पत्नी के नाम एक बंगला रजिस्टर्ड कराने का साहस दिया था। भीड़ में एक बुजुर्ग ने कहा—“देखो, ऐसे नेता अब कहाँ मिलते हैं! जो करते हैं, खुल्लम–खुल्ला करते हैं। सच्चे ईमानदार वही होते हैं जो छुपाते नहीं।” मंत्री जी मुस्कुराए, जैसे यह बात वे रोज़ सुनते हों।

मंच पर पहुँचकर उन्होंने भाषण शुरू किया—“देश में ईमानदारी की कभी कमी नहीं रही, कमी सिर्फ़ उसे समझने वालों की है। जो लोग यह कहते हैं कि भ्रष्टाचार बढ़ रहा है, वे गलत देखते हैं। भ्रष्टाचार नहीं, हमारे अवसर बढ़ रहे हैं।” भीड़ ने तालियाँ बजाईं। एक आदमी ने बगल वाले से कहा—“सही कह रहे हैं, रिश्वत भी तो अब डिजिटल हो गई है। प्रगति तो यही है।” भाषण के बाद “राष्ट्रीय ईमानदारी सम्मान” बांटे गए। हर प्रतिनिधि को एक घड़ी दी गई, जिस पर मंत्री जी का चुनाव चिन्ह खुदा था। किसी पत्रकार ने पूछा—“क्या घड़ी असली है?” आयोजक बोला—“घड़ी असली है, बस समय थोड़ा अपनी मर्ज़ी से चलता है।”

महाकुंभ का दूसरा सत्र शुरू हुआ। विषय था—“आधुनिक समाज और ईमानदारी के नए मानदंड।” पहला वक्ता एक अनुभवी सरकारी बाबू था, जिसने अपनी कुर्सी के नीचे दो फ़ाइलें और संभाल रखी थीं। उसने कहा—“पुराने जमाने में रिश्वत को अपराध माना जाता था। आज हम इसे सहयोग शुल्क कहते हैं। शब्द बदल गया है, भावना वही है—सबका साथ, सबका विकास।” लोग हँस पड़े और तालियाँ बज उठीं। दूसरा वक्ता एक निजी स्कूल का संचालक था, जिसने कहा—“हम बच्चों को नैतिकता सिखाने के लिए हर महीने फीस बढ़ाते हैं, ताकि वे समझें कि जीवन संघर्ष का नाम है।” तभी पीछे से आवाज आई—“कृपया जो कुर्सियाँ चोरी हो गई हैं, उन्हें वापस कर दें।” कुछ प्रतिनिधियों ने मुस्कुराते हुए कहा—“ईमानदारी का महाकुंभ है, कुर्सियाँ बाहर थोड़ी जाएँगी।” कुछ देर बाद पता चला कि बारह कुर्सियाँ पार्किंग में आधे दाम पर बिक रही थीं। आयोजक ने कहा—“यह व्यवस्था शुल्क है।” बाबू जी ने सिर हिलाया—“देश वाकई आगे बढ़ रहा है।”

तीसरे सत्र में “डिजिटल ईमानदारी” पर चर्चा हुई। एक युवा अधिकारी ने कहा—“अब भ्रष्टाचार पारदर्शी हो गया है। पहले दलालों के चक्कर लगते थे, अब ट्रांजैक्शन सीधे खाते में आता है। यह है नई ईमानदारी।” दूसरे वक्ता ने कहा—“ईमानदारी अब एक ऐप की तरह है—डाउनलोड करो, इंस्टॉल करो और फिर दूसरों को दिखाओ।”

इसी बीच एक गरीब आदमी मंच के पास आया, फटा हुआ फ़ॉर्म हाथ में लिए—“बाबू जी, दो महीने से मेरी फ़ाइल अटकी है” बाबू जी ने उसकी बात काटी—“भाई, यह ईमानदारी का महाकुंभ है, कोई कामकाज का दफ्तर नहीं। यहाँ भाषण होते हैं, सुविधा नहीं।” आदमी चुप हो गया, पर पास खड़ा एक बच्चा बोला—“अगर ये सब ईमानदार हैं, तो झूठे हमारे गाँव में रहते होंगे?” पूरा हॉल सन्न रह गया। पंखे की आवाज़ भी जैसे धीमी पड़ गई।

कार्यक्रम के अंतिम चरण में अध्यक्षीय भाषण शुरू हुआ। अध्यक्ष महोदय ने बड़े गर्व से कहा—“इस देश की असली ईमानदारी यही है कि हर व्यक्ति अपने क्षेत्र में सत्य का पालन करता है। डॉक्टर दवाइयों में कमीशन लेता है, शिक्षक अंकों में सुधार करता है, अफ़सर फ़ाइलें दबाता है, नेता वादे करके भूल जाता है—और यही हमारी राष्ट्रीय एकता का आधार है।” सभी हँस पड़े, तालियों की आवाज़ बाहर सड़क तक पहुँच गई।

अंत में आयोजन समिति ने घोषणा की—“महाकुंभ बेहद सफल रहा, क्योंकि पूरे बजट का सदुपयोग हो चुका है। अब अगली वर्षगांठ की तैयारी शुरू होगी, बशर्ते इस बार कोई बड़ा प्रायोजक मिल जाए।”

शाम ढल चुकी थी। प्रतिनिधियों की गाड़ियाँ शहर लौट रही थीं। पंडाल के बाहर एक चाय वाला खड़ा था, जिसने कार्यक्रम में झाँककर बस इतना कहा—“साहब लोग सचमुच बहुत ईमानदार हैं तभी गरीब आज भी ज़िंदा है।” सड़क की बत्तियाँ टिमटिमाईं। शायद वे भी इस नई ईमानदारी की चमक पर हल्की मुस्कान बिखेर रही थीं।

भूजल के लिए सुसंगत नीति जरूरी, प्रदूषक पदार्थों से बढ़ी चिंता

पिछले कुछ वर्षों में भूजल पर भारत की निर्भरता और बढ़ गई है। देश में लगभग 85 प्रतिशत ग्रामीण परिवार अभी भी पेय जल के स्रोत के रूप में इसी पर निर्भर हैं और सिंचाई से जुड़े लगभग दो-तिहाई कार्य जलभृतों (एक्विफर) से पूरे होते हैं। भूजल का इस्तेमाल लगातार बढ़ने के साथ ही उसकी गुणवत्ता भी बिगड़ती जा रही है जिससे सार्वजनिक स्वास्थ्य, कृषि और जल सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा उत्पन्न हो रहा है।

केंद्रीय भूजल बोर्ड द्वारा जारी वार्षिक भूजल गुणवत्ता रिपोर्ट 2025 में कहा गया है कि संकट अब कुछ राज्यों या प्रदूषक पदार्थों तक सीमित नहीं है। भारत अब अनेक प्रदूषकों के साथ आपात स्थिति का सामना कर रहा है और देश के कई क्षेत्रों में नाइट्रेट, फ्लोराइड, आर्सेनिक, यूरेनियम, लवणता और भारी धातुओं के लिए निर्धारित सुरक्षित सीमा पार हो गई है।

सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि देश के उत्तरी राज्यों एवं क्षेत्रों में यूरेनियम की मात्रा खतरनाक स्तर तक पहुंच गई है। पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश के जिलों में यूरेनियम स्वीकार्य 30 पाट्र्स पर बिलियन (पीपीबी) सीमा से बहुत अधिक हो गया है। यूरेनियम का यह खतरनाक स्तर सबसे अधिक पंजाब में देखा गया है जहां मॉनसून से पहले के 53.04 प्रतिशत नमूनों और मॉनसून के बाद के 62.50 प्रतिशत नमूनों में इसकी मात्रा स्वीकार्य सीमा से अधिक पाई गई। इसके साथ ही नाइट्रेट की मात्रा भी अधिक हो गई है जो अक्सर उर्वरक के अत्यधिक उपयोग और खेतों से रसायनयुक्त पानी के बहकर जल स्रोतों तक पहुंचने का नतीजा है। रिपोर्ट में लगभग 20 प्रतिशत नमूनों में नाइट्रेट सीमा से अधिक है और लगभग 8 प्रतिशत में बीआईएस मानक से ऊपर फ्लोराइड है। इस तरह का संदूषण (कंटैमिनेशन) प्राकृतिक और मानवजनित कारकों दोनों से उत्पन्न होता है। राजस्थान या पंजाब के कुछ हिस्सों में भूगर्भीय संरचनाएं ऐसी हैं कि भूजल स्तर गिरने पर फ्लोराइड या यूरेनियम की मात्रा बढ़ने लगती हैं। औद्योगिक अपशिष्ट, अनियमित खनन और अनुपचारित सीवेज तेजी से उन हिस्सों में पानी की गुणवत्ता खराब कर रहे हैं जहां शहरों एवं संबंधित व्यवस्था का विकास तेजी से हो रहा है।

अपर्याप्त अपशिष्ट प्रबंधन के कारण शहरी जलभृतों में सूक्ष्मजीव संदूषण अधिक रहता है। उक्त रिपोर्ट में सबसे चिंताजनक पहलू यह है कि संदूषक पदार्थों की सूची में कई गांव एक साथ नजर आते हैं जो जलभृत स्तर में क्षरण का संकेत देते हैं। इसके गंभीर नतीजे सामने आ सकते हैं। लाखों लोग जो जल के लिए बोरवेल पर निर्भर हैं, उनमें फ्लोरोसिस, नाइट्रेट विषाक्तता, आर्सेनिक से संबंधित बीमारियां और भारी धातुओं और यूरेनियम से जुड़े दीर्घकालिक कैंसर का खतरा अधिक रहता है। कृषि पर इसका प्रभाव भी उतना ही चिंताजनक है। दूषित भूजल न केवल उपज कम करता है बल्कि खाद्य श्रृंखला में विषाक्त पदार्थों के प्रदूषित होने का खतरा भी बढ़ा देता है।

तमिलनाडु में छतों पर वर्षा जल संचयन से संबंधित कानून या पश्चिम बंगाल में आर्सेनिक-शमन जैसे राज्य-स्तरीय प्रयास अपर्याप्त हैं। इस संकट से निपटने के लिए एक सुसंगत राष्ट्रीय भूजल स्वास्थ्य मिशन की आवश्यकता है। फसल विविधीकरण, उर्वरकों के नियंत्रित इस्तेमाल और मिट्टी में नमी संरक्षण जैसे कृषि जल उपाय किए जा सकते हैं। अधिक संदूषण का संकट झेल रहे गांवों के लिए विकेंद्रीकृत निस्पंदन प्रणाली जैसे सामुदायिक-स्तर पर आरओ और आयन-एक्सचेंज इकाइयां आदि को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। शहरी क्षेत्रों में सख्त सीवेज उपचार मानकों, रिसाव का पता लगाने वाली प्रणालियों और औद्योगिक निर्वहन निगरानी की आवश्यकता होती है।

पाइप से जलापूर्ति, पीने योग्य पानी के कियोस्क और वास्तविक समय पर गुणवत्ता पर नजर रखने जैसे उपायों के माध्यम से सुरक्षित पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करने को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। दूषित पदार्थों में स्पष्ट क्षेत्रीय भिन्नता के मद्देनजर स्थानीय भूजल प्रबंधन भी आवश्यक है। स्थानीय सरकारों को जल भूविज्ञान आकलन करने, जल-सुरक्षा योजनाएं बनाने और जलभृत पुनर्भरण संरचनाओं का प्रबंधन करने में सक्षम बनाकर सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा मिल सकता है। बेतरतीब ढंग से जल निष्कर्षण रोकने के लिए भूमि स्वामित्व से अलग एक स्पष्ट रूप से परिभाषित भूजल अधिकारों की तरफ कदम बढ़ना भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है।

अभियान

पैर छूने से पुण्य घटता है या बढ़ता है - एक अनंत परंपरा की जीवित कथा

भारतीय जीवन में किसी बड़े के चरण स्पर्श करना केवल एक क्रिया नहीं है, यह एक ऐसी अनादी परंपरा है जो युगों से मानव के भीतर बसे अहंकार को पिघलाती आई है। सवाल यह है कि क्या जब कोई छोटा किसी बड़े के पैर छूता है, तो बड़े का पुण्य कम हो जाता है? यह बात सुनने में तर्क जैसी लग सकती है, लेकिन आध्यात्मिक दृष्टि से यह उतनी ही निराधार है जितना यह मान लेना कि सूर्य अपनी रोशनी किसी को देने से अंधेरा हो जाता है।

इस बात को समझने के लिए एक पुरानी कथा हमेशा जीवंत रहती है। कहा जाता है कि प्राचीन काल में एक ऋषि के पास प्रतिदिन असंख्य शिष्य आकर उनके चरण स्पर्श करते थे। एक दिन एक जिज्ञासु शिष्य ने उनसे पूछा—“गुरुदेव, क्या इतने लोग आपके चरण छूते हैं, इससे आपका पुण्य कम नहीं हो जाता?” ऋषि मुस्कुराए और बोले—“पुत्र, क्या किसी दीपक से एक हजार दीप जलाने पर उसकी लौ घट जाती है? या क्या गंगा में एक लोटा जल डालने से उसका प्रवाह रुक जाता है? सच तो यह है कि जो देता है, वह अंत में और अधिक पाता है।”

ऋषि की बात केवल प्रतीक नहीं थी, वह ब्रह्मांड के सूक्ष्म नियमों की गहरी समझ थी। जब कोई छोटा श्रद्धा से झुकता है, तो उसकी विनम्र ऊर्जा एक चमकती हुई लहर की तरह बड़े के हृदय तक पहुंचती है। वह लहर बड़े के भीतर मौजूद करुणा और शुभभावना को जाग्रत करती है, और उसी क्षण वह आशीर्वाद के रूप में छोटे के लिए वापस बहने लगती है। इस प्रवाह में पुण्य का कोई घटाव नहीं होता; बल्कि दोनों के भीतर का प्रकाश और उज्ज्वल हो जाता है।

इसी बात को प्रेमानंद महाराज एक और मनमोहक उदाहरण से समझाते हैं—जैसे नदी में पानी डालने से नदी कभी कम नहीं होती, बल्कि और गहराई प्राप्त करती है। वैसे ही जब कोई अपने चरण स्पर्श करने वाले को आशीर्वाद देता है, तो उसका पुण्य कम नहीं होता, बल्कि वह और अधिक कोमल, व्यापक और शांत हो जाता है। पुण्य कभी किसी तिजोरी में बंद सोने की तरह नहीं होता, जिसे निकालने पर वह घटता हो। पुण्य तो एक प्रवाहित शक्ति है—जिसे जितना अधिक बांटो, वह उतना ही अधिक बढ़ती है।

कहते हैं कि जहां विनम्रता है, वहीं देवत्व उतरता है। और जहां अहंकार है, वहां पुण्य सूख जाता है। यदि कोई यह सोचकर अपने चरण किसी से न छुआने दे कि “इससे मेरा पुण्य कम होगा”, तो यह वही क्षण होता है जब उसके भीतर अहंकार अपना घर बना लेता है। और अहंकार वही अग्नि है जो संचित पुण्य को धीरे-धीरे भस्म कर देती है।

शास्त्रों की आवाज भी यही कहती है कि जब कोई छोटा किसी बड़े के चरण छूता है, तो दोनों का पुण्य बढ़ता है—क्योंकि दोनों ही क्षणभर के लिए अपने-अपने अहंकार से मुक्त हो जाते हैं। छोटा झुककर विनम्रता पाता है, बड़ा आशीर्वाद देकर करुणा को विस्तार देता है। और यह विनम्रता और करुणा ही तो पुण्य का वास्तविक स्रोत हैं।

एक बार एक वृद्ध साधु एक विशाल वृक्ष के नीचे बैठे हुए थे। लोग आते, उनके चरण छूते, आशीर्वाद लेते। एक यात्री दूर से यह सब देखकर सोचने लगा—“यह साधु तो खुद इतनी श्रद्धा पा रहा है, इसका पुण्य तो निश्चित ही घट रहा होगा।” उसने साधु से पूछा—“बाबा, क्या चरण छूने वालों से आपका पुण्य कम नहीं होता?” साधु ने अपनी आंखें खोलीं, मुस्कुराए और बोले—“पुत्र, यह वृक्ष देखो लोग इसकी छाया लेते हैं, इसके फल तोड़ते हैं, इसके नीचे विश्राम करते हैं। क्या यह वृक्ष कभी कम होता है? नहीं क्योंकि यह देने में ही पूर्ण होता है। मनुष्य भी तब तक धन्य नहीं होता जब तक वह बांटने का साहस नहीं रखता।”

साधु फिर बोले—“बरसों की तपस्या से जो पुण्य मिलता है, वह किसी के प्रणाम करने से नहीं घटता। उल्टा, जब कोई श्रद्धा से चरण छूता है, तो वह श्रद्धा मेरे भीतर बसे ईश्वर तक पहुंचती है, और वही ईश्वर मेरी करुणा को सौ गुना करके वापस भेज देता है। पुण्य बांटने की चीज है, कम होने की नहीं।”

भारतीय संस्कृति में पैर छूना केवल एक परंपरा नहीं है, यह दो आत्माओं का वह क्षण है जहाँ अहंकार मिटता है, श्रद्धा खिलती है और आशीर्वाद बहता है। यह पुण्य का आदान–प्रदान नहीं, यह प्रकाश का विस्तार है। और प्रकाश कभी बांटने से कम नहीं होता—वह हजारों दीपों में फैलकर ब्रह्मांड को और अधिक उजाला देता है।

यही कारण है कि पैर छूने की परंपरा को “पुण्य घटने” से नहीं, बल्कि “पुण्य बढ़ने” की परंपरा कहा गया है।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने अहमदाबाद को कई विकास परियोजनाओं की सौगात दी

(जीएनएस)। गांधीनग : गुजरात के दौरे पर आए केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने रविवार को अहमदाबाद को अनेक विकास परियोजनाओं की सौगात दी। अहमदाबाद महानगर पालिका (एएमसी) की 1507 करोड़ रुपए की विभिन्न जनोन्मुखी विकास परियोजनाओं के लोकार्पण और शिलान्यास अवसर पर मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल भी मौजूद रहे।

इस अवसर पर केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह के करकमलों से देवनगर में आकार लेने वाले मिनी स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स के शिलान्यास सहित विभिन्न विकास कार्यों का लोकार्पण और शिलान्यास किया गया। इस मौके पर मुख्यमंत्री गृह योजना के अंतर्गत बने 465 आवासों और प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत बने 1573 आवासों का ड्रॉ भी निकाला गया। केंद्रीय गृह मंत्री ने आवासों के लाभार्थियों को प्रतीकात्मक रूप से घर की चाबी सौंपी।

उपस्थित महानुभावों के करकमलों से अहमदाबाद महानगर पालिका में नियुक्ति पाने वाले 102 सहायक फायरमैन को नियुक्ति पत्र सौंपे गए।

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने विभिन्न विकास परियोजनाएं जनता को समर्पित करते हुए कहा कि तत्कालीन मुख्यमंत्री और मौजूदा प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा गुजरात में शुरू की गई खेल महाकुंभ की यात्रा आज देश में खेलो इंडिया के जरिए आगे बढ़ी है। जिसके माध्यम से अनेक खिलाड़ी अपने शरीर और मन को मजबूत कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि जीतने का जुनून और हार में निराश नहीं होने के संस्कार भी खेलों से मिल रहे हैं।

श्री शाह ने आगे कहा कि अहमदाबाद में अनेक खेल परिसरों सहित अंतरराष्ट्रीय स्तर की व्यवस्थाएं की गई हैं, जिनके चलते खिलाड़ी पांच किलोमीटर के दायरे में इन सुविधाओं का लाभ उठाकर अपनी प्रतिभा को उजागर कर रहे हैं। उन्होंने जगह के सदुपयोग के लिए अहमदाबाद शहर को बधाई देते हुए कहा कि शहर में ओवरब्रिज के नीचे छोटे खेल परिसर, पुस्तकालय, ओपन जिम और योग परिसर बनाकर अहमदाबाद अनेक शहरों को प्रेरणा दे रहा है।

केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि दुनिया के सबसे बड़े क्रिकेट स्टेडियम के बगल में सरदार पटेल स्पोर्ट्स एन्क्लेव बनने के साथ-साथ खेल क्षेत्र में अनेक सुविधाओं के विकास के कारण अहमदाबाद को कॉमनवेल्थ 2030 की मेजबानी मिली है। साथ ही, अहमदाबाद ने आगामी 2029 में दुनिया भर के पुलिस और फायर ब्रिगेड जवानों की खेल स्पर्धाओं और लगभग 13 अंतरराष्ट्रीय स्पर्धाओं के साथ 2036 ओलंपिक के लिए तैयारी की है। इसके साथ ही, अहमदाबाद वैश्विक खेल मानचित्र पर अग्रिम स्थान बना रहा है।

1500 करोड़ रुपए से अधिक के विकास कार्यों के लिए राज्य के मुख्यमंत्री सहित सरकार के प्रति आभार व्यक्त करते हुए श्री शाह ने कहा कि ये काम विकास के बजट में जोड़े जाएंगे, विकास का कोई आयाम छूट न जाए, इसका ध्यान रखते हुए श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू की गई विकास यात्रा को मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल आगे बढ़ा रहे हैं।

श्री अमित शाह ने कहा कि श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश में हर क्षेत्र में विकास हो रहा है, सरकार देश को महान बनाने के संकल्प के साथ काम कर रही है। ऐसे में, बिना नेता और नीति वालों को देश की जनता किसी भी कोने में स्थान नहीं दे रही है, जो सरकार के प्रति जनता के विश्वास को बताता है।

उन्होंने अयोध्या राम मंदिर निर्माण के संबंध में कहा कि देश के प्रधानमंत्री के नेतृत्व में वर्ष 2019 में भूमिपूजन, 2024 में प्राण प्रतिष्ठा और 2025 में ध्वज लहराने का गौरवपूर्ण कार्य हुआ है। साथ ही, सीता माता के जन्म स्थान पर भी भूमिपूजन कर इस यात्रा को आगे बढ़ाने का काम हो रहा है।

श्री शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में देश में सुरक्षा, अर्थव्यवस्था, अवसंरचना विकास, सिंचाई की सुविधा में वृद्धि, अनाज उत्पादन में बढ़ोतरी और एमएसपी पर खरीदी में वृद्धि जैसे अनेक आयामों के जरिए देश की प्रतिष्ठा दुनिया भर में बढ़ रही है।

श्री अमित शाह ने गुजरात के विभिन्न विकास के मील के पत्थरों की बात करते हुए कहा कि दुनिया का सबसे बड़ा हाइब्रिड रिन्यूएबल एनर्जी पार्क गुजरात में साकार होने जा रहा है। एशिया की सबसे बड़ी ग्रीनफील्ड सिटी धोलेरा गुजरात में निर्माणाधीन है। भारत का सबसे लंबा एक्सप्रेस हाईवे सूरत-चेन्नई हाईवे गुजरात से होकर गुजर रहा है। देश की सबसे पहली फाइनेंस टेक-सिटी 'गिफ्ट सिटी' गुजरात में है। पहली बुलेट ट्रेन अहमदाबाद से मुंबई के बीच शुरू होने जा रही है तथा पहली नमो रैपिड रेल भुज से अहमदाबाद के बीच शुरू हो चुकी है।

श्री शाह ने कहा कि देश आगे बढ़ रहा है, तब गांधीनगर लोकसभा क्षेत्र को हरित लोकसभा क्षेत्र बनाने के लिए हम सभी को कमर कसनी होगी, इसके लिए उन्होंने सभी लोगों से 5 से 50 पौधे लगाने और उनका संरक्षण करने का भी संकल्प लेने का अनुरोध किया।

केंद्रीय गृह मंत्री ने सशस्त्र सेना झंडा दिवस पर सेना के अप्रतिम साहस, शौर्य और उनके बलिदान की सराहना करते हुए उन्हें हृदयपूर्वक श्रद्धांजलि दी।

मुख्यमंत्री ने सशस्त्र सेना झंडा दिवस के अवसर पर देश सेवा और सीमाओं की सुरक्षा करने वाले सभी जवानों के त्याग, तपस्या और बलिदान का स्मरण करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने सैनिक कल्याण के अनेक कार्यों से जवानों का गौरव-सम्मान किया है। देश की सीमाओं के साथ ही आंतरिक सुरक्षा और सलामती का भी ध्यान रखा गया है। उनके नेतृत्व में देश में विकास की राजनीति का एक नया युग शुरू हुआ है और उसमें में गुजरात विकास के रोल मॉडल के रूप में अग्रणी रहा है। उन्होंने कहा कि गुजरात विकास की इस अविरत यात्रा में लगातार नए आयाम स्थापित कर रहा है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह द्वारा गांधीनगर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में निरंतर विकास कार्यों की भेंट दिए जाने का उल्लेख करते हुए कहा कि श्री शाह ने अहमदाबाद की विकास यात्रा को नया बल दिया है और उसी दिशा में आज फिर एक बार वे 1507 करोड़ रुपए के जनोन्मुखी कार्यों की भेंट दे रहे हैं। श्री अमित शाह ने अपने संसदीय क्षेत्र को देश का सर्वाधिक विकसित संसदीय क्षेत्र बनाने का लक्ष्य रखा है, जिसे साकार करने के लिए गांधीनगर संसदीय क्षेत्र में पिछले पांच वर्षों में 22551 करोड़ रुपए से अधिक के विकास कार्य इस क्षेत्र में हुए हैं। मुख्यमंत्री ने जोड़ा कि आवास, ड्रेनेज, स्टॉर्म वॉटर लाइन, सड़क, बिजली सहित इंफ्रास्ट्रक्चर के कार्यों के कारण शहर की सुविधा में वृद्धि हुई है।

शहरी विकास की चर्चा करते हुए श्री पटेल ने कहा कि इंफ्रास्ट्रक्चर के साथ नागरिकों के इज ऑफ लिविंग में वृद्धि हो; इसके लिए लेक डेवलपमेंट, बाग-बगीचों का विकास, लाइब्रेरी, खेल-कूद परिसर भी तैयार किए गए हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का सपना है कि देश के प्रत्येक नागरिक के सर पर पक्की छत हो, प्रत्येक का अपना घर हो। इसके लिए उन्होंने प्रधानमंत्री आवास योजना शुरू कराई है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) अंतर्गत गुजरात में 13 लाख से अधिक आवास बने हैं। ये आवास केवल ईंट-पत्थर के मकान नहीं, बल्कि पर्याप्त सुविधाओं से युक्त घर हैं।

कार्यक्रम अंतर्गत लोकार्पण तथा शिलान्यास होने वाले आवासों के बारे में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि श्री अमितभाई ने हमेशा लॉन्ग टर्म तथा सस्टेनेबल डेवलपमेंट पर बल दिया है। उनके सक्रिय प्रयासों के परिणामस्वरूप गांधीनगर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र हरित निर्वाचन क्षेत्र बना है। शहरी क्षेत्र का ही ग्रीन कवर लगभग 8 प्रतिशत बढ़ा है। मियावाकी पद्धति से अर्बन फॉरेस्ट का निर्माण में किया गया है। लगभग 28 लाख पेड़-पौधे लगाकर ग्रीन कवर में वृद्धि की गई है। वृक्षारोपण, तालाबों का पुनर्निर्माण, ऑक्सीजन पार्क सहित एक पूरा पर्यावरण फ्रेंड्ली इकोसिस्टम तैयार किया गया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में जब देश का अमृतकाल चल रहा है, तब प्रधानमंत्री तथा केंद्रीय गृह मंत्री के सफल प्रयासों के परिणामस्वरूप अमृतकाल में अहमदाबाद को कॉमनवेल्थ गेम्स 2030 की मेजबानी प्राप्त हुई है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि कॉमनवेल्थ गेम्स के कारण अहमदाबाद शहर में विकास की गति दुगुनी होगी। आने वाले दिनों में अनेक विश्व स्तरीय परियोजनाएं साकार होंगी और अहमदाबाद देश के स्पोर्ट्स कैपिटल के रूप में स्थापित होगा। शहर की महापौर श्रीमती प्रतिभाबेन जैन ने स्वागत संबोधन में विकास परियोजनाओं के लोकार्पण-शिलान्यास कार्यक्रम सभी का स्वागत किया। उन्होंने अहमदाबाद को क्लीनेस्ट सिटी के रूप में सम्मान प्राप्त करने और कॉमनवेल्थ गेम्स की मेजबानी प्राप्त होने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी तथा केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह का आभार व्यक्त किया। श्रीमती जैन ने लोकार्पण-शिलान्यास किए गए विभिन्न विकास प्रोजेक्ट के विषय में चर्चा की और ऐसे जनोन्मुखी विकास कार्यों की भेंट देने के लिए केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह का आभार व्यक्त किया।

यहाँ उल्लेखनीय है कि केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने अहमदाबाद के थलतेज में 881 ईडब्लूएस आवासों का तुलसी रेजीडेंसी नामकरण कर लोकार्पण किया। इसके अलावा, साउथ बोपल में इलेक्ट्रोथर्म गार्डन का लोकार्पण, सरखेज गाँव में श्री क्षेत्र सरोवर का लोकार्पण, वस्त्रापुर में पुनर्विकसित किए गए भक्तकवि नरसिंह मेहता सरोवर – वस्त्रापुर तालाब का लोकार्पण किया।

साथ ही, श्री शाह ने मेमनगर में नारायणराव भंडारी ओपन पार्टी प्लॉट का लोकार्पण, नवा वाडज-नटना छापरा में रिहेबिलिटेट किए गए 250 आवासों का लोकार्पण तथा गोता में मिनी स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स का शिलान्यास किया। इसके अलावा, उन्होंने राणिप ओवरब्रिज के पास स्थित खेल-कूद गतिविधि परिसर एवं न्यू राणिप में स्थित जिम्नेशियम तथा वांचनालय (पठनालय) की मुलाकात भी ली।

विभिन्न विकास परियोजनाओं के लोकार्पण-शिलान्यास अवसर पर वित्त मंत्री श्री कनुभाई देसाई, ऊर्जा एवं पेट्रोरसायन मंत्री श्री ऋषिकेशभाई पटेल, राज्य मंत्री श्रीमती दर्शनाबेन वाघेला, राज्यसभा के सांसद श्री नरहरि अमीन, अहमदाबाद पूर्व व पश्चिम के सांसद श्री हसमुखभाई पटेल व श्री दिनेशभाई मकवाणा, अग्रणी श्री प्रेरकभाई शाह, अहमदाबाद शहर के विधायक, अहमदाबाद मनपा आयुक्त श्री बंछानिधि पाणि, उप महापौर, स्थायी समिति के अध्यक्ष, पार्षद, मनपा में शासक पक्ष के नेता, सचेतक, विभिन्न समितियों के अध्यक्ष, मनपा अधिकारी, पदाधिकारी तथा बड़ी संख्या में नगरजन उपस्थित रहे।

अहमदाबाद महानगर पालिका के 1507 करोड़ रुपए के विभिन्न जनोन्मुखी विकास कार्यों के लोकार्पण व शिलान्यास सहित आवासों का ड्रॉ संपन्न

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की प्रोत्साहक उपस्थिति में 525 करोड़ रुपए के 28 विकास कार्यों का लोकार्पण और 982 करोड़ रुपए के 30 विकास कार्यों का शिलान्यास

देवनगर में मिनी स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स का शिलान्यास किया गया और एएमसी में नवनियुक्त 102 सहायक फायरमैन को नियुक्ति पत्र सौंपे गए

केंद्रीय गृह मंत्री एवं सहकारिता श्री अमित शाह :-

- कॉमनवेल्थ 2030 की मेजबानी के साथ, अहमदाबाद 2036 ओलंपिक के स्वागत के लिए तैयार हो रहा है
- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में वर्ष 2019 में भूमिपूजन, 2024 में प्राण प्रतिष्ठा और 2025 में ध्वज लहराने के साथ अयोध्या मंदिर का गौरवपूर्ण कार्य संपन्न हुआ

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल :-

- श्री अमित शाह का गांधीनगर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र को देश का सबसे विकसित संसदीय क्षेत्र बनाने का लक्ष्य
- आगामी दिनों में अहमदाबाद देश की खेल राजधानी के रूप में स्थापित होगा

पश्चिम रेलवे चलाएगी बांद्रा टर्मिनस – दुर्गापुरा – मदार के बीच सुपरफास्ट स्पेशल ट्रेन

(जीएनएस)। यात्रियों की सुविधा तथा यात्रा की बढ़ती मांग को पूरा करने एवं अतिरिक्त भीड़ को नियंत्रित करने के उद्देश्य से पश्चिम रेलवे बांद्रा टर्मिनस – दुर्गापुरा – मदार स्टेशनों के बीच विशेष किराए पर एक सुपरफास्ट स्पेशल ट्रेन चलाएगी। पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, इस ट्रेन का विवरण इस प्रकार हैः

ट्रेन संख्या 09604/09603 बांद्रा टर्मिनस – दुर्गापुरा – मदार सुपरफास्ट स्पेशल (02 फेरे)

ट्रेन संख्या 09604 बांद्रा टर्मिनस – दुर्गापुरा सुपरफास्ट स्पेशल मंगलवार, 09 दिसम्बर 2025 को बांद्रा टर्मिनस से 19:25 बजे प्रस्थान करेगी और अगले दिन 15:10 बजे दुर्गापुरा पहुंचेगी। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09603 मदार – बांद्रा टर्मिनस सुपरफास्ट स्पेशल सोमवार, 08 दिसम्बर 2025 को मदार से 18:45 बजे प्रस्थान करेगी और अगले दिन 16:30 बजे बांद्रा टर्मिनस पहुंचेगी।

यह ट्रेन दोनो दिशाओं में बोरीवली, वापी, वलसाड, नवसारी, सूरत, वडोदरा, रतलाम, भवानी मंडी, रामगंज मंडी, कोटा और सवाई माधोपुर स्टेशनों पर ठहरेंगी। मदार स्टेशन से प्रस्थान करनेवाली ट्रेन संख्या 09603 का किशनगढ़, जयपुर और दुर्गापुरा स्टेशनों पर अतिरिक्त ठहराव होगा।

इस ट्रेन में AC-2 टियर, AC-3 टियर, AC-3 टियर (इकोनॉमी), स्लीपर क्लास तथा जनरल सेकंड क्लास कोच होंगे।

ट्रेन संख्या 09604 की बुकिंग 08.12.2025 से सभी पीआरएस काउंटरों एवं आईआरसीटीसी वेबसाइट पर शुरू होगी। ट्रेनों के ठहराव, समय एवं संरचना से संबंधित विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

माननीय सांसद श्रीं मितेषभाई पटेल और माननीय मंत्री श्री रमणभाई सोलंकी ने हरी झंडी दिखाकर की वासद – कठाणा खंड पर डेमू सेवा की शुरुआत

(जीएनएस)। आणंद के माननीय सांसद श्रीं मितेषभाई पटेल, गुजरात सरकार के माननीय खाद्य विभाग,नागरिक आपूर्ति, उपभोक्ता सुरक्षा मंत्री श्री रमणभाई सोलंकी तथा उपस्थित अन्य जनप्रतिनिधियों द्वारा आज, 7 दिसंबर, 2025 को कठाणा में आयोजित समारोह में कठाणा से डेमू को हरी झंडी दिखाकर वासद – कठाणा खंड पर इस सेवा को पुनर्बहाल किया गया। इस अवसर वडोदरा मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके एवं मंडल के वरिष्ठ अन्य अधिकारी, प्रेस एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के प्रतिनिधि एवं क्षेत्र की जनता उपस्थित थी। उद्घाटक सेवा के रूप में यह डेमू ट्रेन कठाणा से वासद के बीच परिचालित की गई । 8 दिसंबर, 2025 से यह डेमू अपनी नियमित सेवा के रूप में कठाणा और वडोदरा के बीच परिचालित होगी। माननीय जनप्रतिनिधियों ने डेमू सेवा में सफ़र भी किया।

आणंद के माननीय सांसद श्रीं मितेषभाई पटेल ने वर्षों बाद जनता की मांग पर इस सेवा को पुनः शुरु किये जाने पर ख़ुशी ज़ाहिर की। श्री पटेल ने कठाणा के लोगो को बधाई देते हुए कहा कि यह ट्रेन शुरु होने से स्थानीय निवासियों को काफी सहूलियत होगी। उन्होंने माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का आभार प्रकट किया कि वो अपने व्यस्त जीवन में भी राष्ट्र की जनता की चिंता करते है और गुजरात में भयंकर बाढ़ के बाद उन्होंने गुजरात सरकार और रेल मंत्री जी के साथ जनता की परेशानिया दूर करने की योजना बनाई। उन्होंने माननीय रेलमंत्री श्री अश्विनी वैष्णव जी का भी धन्यवाद किया, जिनके निर्देश पर यह सपना साकार हुआ। उन्होंने वडोदरा मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके के पॉजिटिव सपोर्ट का भी धन्यवाद दिया। उन्होंने मंडल रेल प्रबंधक से ट्रेन के स्टॉपेज बढ़ाने और इस मार्ग पर भविष्य में इलेक्ट्रिक ट्रेन चलाने की मांग की।

गुजरात सरकार के माननीय खाद्य विभाग,नागरिक आपूर्ति, उपभोक्ता सुरक्षा मंत्री श्री रमणभाई सोलंकी ने जनमानस को सम्बोधित करते हुए बताया कि इस ट्रेन को कोरोना काल के बाद दुबारा चलाने की मांग सोशल मीडिया पर भी लोगों द्वारा जोर शोर से हो गए थी।आज जनता का सपना साकार हो रहा है और कोरोना काल के बाद इस रेलखंड पर पुनः यह डेमू ट्रेन शुरु हो रही है। उन्होंने माननीय रेलमंत्री श्री अश्विनी वैष्णव जी का विशेष तौर पर धन्यवाद किया, जिनके विशेष प्रयासों से डेमू ट्रेन की शुरुआत हुई, जिससे कठाणा और आस पास के क्षेत्रों से रोजगार एवं शिक्षा के लिया वडोदरा जाने वाले युवाओं, आस पास के गांव की जनता को इस ट्रेन के दुबारा शुरु होने से लाभ मिलेगा। उन्होंने लोगो से इस ट्रेन से ज्यादा से ज्यादा सफ़र कर सहयोग करने का भी अनुरोध किया, जिससे बढ़ती मांग को देखते हुए इसमें कोचों की संख्या बढ़ाई जा सके और ज्यादा से ज़्यादा लोगों को इस सुविधा का लाभ मिल सके।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में वडोदरा मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके ने मुख्य अतिथि, माननीय जनप्रतिनिधिओं एवं अन्य अतिथिगणों का स्वागत किया तथा माननीय सांसद श्री मितेषभाई पटेल द्वारा रेल सुविधाएँ बढ़ाने के लिए किए जा रहे निरंतर प्रयासों की सराहना की। उन्होंने बताया कि किस प्रकार माननीय रेलमंत्री श्री अश्विनी वैष्णव जी के निर्देशन में महज़ 4 महीने में इस कठिन कार्य को मंडल के अधिकारिओं एवं कर्मचारिओं ने सफलतापूर्वक किया। श्री भडके ने बताया कि कथना से वड़ोदरा के बीच अभी 4 घंटे का सफ़र है, जिसे भविष्य में और कम किया जायेगा। जिला परिषद् के सहयोग से समपार फाटकों को डायवर्सन देकर या उन फाटकों पर रोड ओवर ब्रिज बनाकर इसे बंद किया जायेगा, जिससे ट्रेन की गति को बढ़ाया जा सकेगा। इससे कठाणा और वडोदरा के बीच का सफ़र महज़ 2 घंटों में पूरा किया जा सकेगा और यात्रिओं के समय की बचत होगी। आणंद के सांसद श्री मितेषभाई पटेल, गुजरात सरकार के माननीय खाद्य विभाग,नागरिक आपूर्ति, उपभोक्ता सुरक्षा मंत्री श्री रमणभाई सोलंकी और जनप्रतिनिधियों ने इस अवसर पर कठाणा - वासद रेल खंड को महज़ 4 महीने में अपनी मेहनत से ट्रेन परिचालन योग्य बनाने के लिए मंडल रेल प्रबंधक तथा मंडल के रेल अधिकारियों का सम्मान किया।

अपनी नियमित सेवा के रूप में 8 दिसंबर, 2025 से सप्ताह में 6 दिन (शनिवार को छोड़कर) यह डेमू कठाणा और वडोदरा के बीच परिचालित होगी। ट्रेन संख्या 79440 कठाणा - वडोदरा डेमू कठाना से प्रातः 5.15 बजे प्रस्थान कर प्रातः 9.20 बजे वडोदरा पहुंचेगी। वापसी में ट्रेन संख्या 79439 वडोदरा – कठाणा डेमू वडोदरा से 16.55 बजे प्रस्थान कर 21.00 बजे कठाणा पहुंचेगी। यह डेमू दोनों दिशाओं में बोचासन, बोरसद, वासद, नन्देसरी, रनोली और बाजवा स्टेशनों पर ठहरेगी।

ठगी के आरोप में बॉलीवुड निर्देशक विक्रम भट्ट गिरफ्तार 30 करोड़ रुपये के फिल्म निवेश घोटाले की जांच तेज

(जीएनएस)। मुंबई। बॉलीवुड के चर्चित निर्देशक विक्रम भट्ट को मुंबई की यारी रोड से गिरफ्तार कर लिया गया है। उदयपुर पुलिस और मुंबई पुलिस की संयुक्त कार्रवाई में भट्ट पर आरोप है कि उन्होंने फिल्म प्रोडक्शन के नाम पर उदयपुर के एक डॉक्टर से 30 करोड़ रुपये ठग लिए। पुलिस ने बताया कि यह मामला गंभीर आर्थिक अपराधों में आता है और इसकी जांच कई राज्यों में फैले नेटवर्क तक जाएगी। उदयपुर निवासी डॉक्टर अजय मुर्डिया ने पुलिस को बताया कि उन्होंने भट्ट और उनकी पत्नी श्वेतांबरी भट्ट समेत छह अन्य लोगों के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई थी। शिकायत में आरोप लगाया गया है कि चार फिल्मों के निर्माण के लिए डॉक्टर से मोटा निवेश लिया गया, लेकिन केवल दो फिल्में ही बनीं और उनके राइट्स डॉक्टर को नहीं दिए गए। इसके अलावा कथित रूप से फर्जी बिल और ओवरवैल्यूड बिल बनाकर निवेशकों को भ्रमित किया गया। डॉक्टर ने कहा कि उन्हें फिल्में और रॉयल्टी का वादा किया गया था, लेकिन वास्तविकता इससे बिल्कुल अलग रही। पुलिस ने बताया कि गिरफ्तारी के समय भट्ट मुंबई में मौजूद थे और उनकी पहचान कई दिनों से की जा रही थी। सात दिन पहले ही लुकआउट नोटिस जारी किया गया था, ताकि वह देश

छोड़कर न जा सकें। अब उन्हें उदयपुर ट्रांजिट रिमांड पर ले जाने की तैयारी की जा रही है। इसके लिए मुंबई की बांद्रा कोर्ट में अर्जी दायर की जाएगी, ताकि आगे की पूछताछ और सभी तथ्यों की जांच की जा सके। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि जांच में निवेश अनुबंध, फिल्म निर्माण लागत, रॉयल्टी भुगतान और फर्जी बिलिंग जैसे पहलुओं को मिलान किया जा रहा है। फिल्म उद्योग के जानकारों का कहना है कि अगर इस मामले में आरोप सही साबित हुए, तो यह बॉलीवुड में फिल्म फाइनेंसिंग और निवेश मॉडल में मौजूद पारदर्शिता की कमी को उजागर करेगा। लंबे समय से फिल्म प्रोडक्शन में बाहरी निवेश और निजी पूंजी पर निर्भरता रही है, और इस घटना ने निवेशकों और निर्माताओं के बीच भरोसे के संबंधों पर सवाल खड़े कर दिए हैं।

विक्रम भट्ट, जो अपने करियर में सैकड़ों करोड़ की फिल्मों से जुड़े रहे हैं, इस समय कानूनी जाल में फंसे हुए हैं। पुलिस पूछताछ के दौरान उनके वित्तीय लेन-देन, बिलिंग और निवेशकों से संचार का विस्तृत अध्ययन किया जाएगा। ट्रांजिट रिमांड के बाद ही स्पष्ट होगा कि मामले में और कितने लोग शामिल हैं और निवेशकों के पैसे की वापसी की क्या संभावना है। यह मामला न सिर्फ आर्थिक अपराध की श्रेणी में महत्वपूर्ण है, बल्कि फिल्म उद्योग में निवेशकों की सुरक्षा और पारदर्शिता की दिशा में भी अहम संकेत देगा।

आलू निर्यात में रुकावट से फर्रुखाबाद के किसान घाटे में, लागत भी नहीं निकल पा रही

(जीएनएस)। फर्रुखाबाद। उत्तर प्रदेश के आलू उत्पादक जिले फर्रुखाबाद के किसानों के चेहरे पर चिंता की लकीरें गहरी होती जा रही हैं। कारण है आलू निर्यात में लगातार रुकावट और मंडियों में घटते दाम। किसान मेहनत के बावजूद अपनी लागत भी नहीं निकाल पा रहे हैं और भाव गिरने के कारण घाटा झेल रहे हैं।

फर्रुखाबाद की एशिया की प्रसिद्ध आलू मंडी सतनपुर में शनिवार को आलू की आमदनी लगभग 12,000 पैकेट दर्ज की गई। लेकिन भाव गिरकर केवल 271 रुपए प्रति पैकेट (50 किलो) रह गया। आढ़ती संघ के अध्यक्ष रिंकू वर्मा ने बताया कि लिवाली कम होने के कारण आलू बेचने में समय ज्यादा लगा और मंडी में आए किसान मायूस नजर आए। आलू के भाव गिरने के कारण कई किसान घर लौटते समय निराशा में डूबे हुए थे। किसानों का कहना है कि एक पैकेट आलू उगाने की लागत लगभग 500 रुपए है, जिसमें बीज, खाद, बुवाई और अन्य खर्च शामिल हैं। वर्तमान भाव केवल 270 रुपए प्रति पैकेट होने से किसान 230 रुपए प्रति पैकेट घाटे में हैं। प्रगतिशील किसान नारद सिंह कश्यप ने बताया कि कई बार निर्यात के लिए शासन-प्रशासन को पत्र लिखे गए, लेकिन कोई ठोस नीति न बनने के कारण समस्या बढ़ती जा रही है।

आलू विपणन संघ के निदेशक अशोक कटियार ने कहा कि निर्यात में रुकावट के कारण किसानों को भारी नुकसान उठाना पड़ रहा है। शीत गृहों में भंडारित आलू के दाम भी गिर गए हैं और लगभग 10% आलू अभी भी शीत गृहों में रखा हुआ है। जनवरी के पहले सप्ताह तक शीत गृह खाली कर दिए जाएंगे, लेकिन इस दौरान कीमतों में सुधार नहीं होने से शीत गृह मालिक भी चिंतित हैं। जिला आलू विकास अधिकारी राघवेंद्र सिंह ने बताया कि आलू की खेती का क्षेत्रफल हर साल बढ़ रहा है, जिससे भावों पर दबाव बन रहा है। उन्होंने किसानों को सलाह दी कि वे दूसरी लाभकारी फसल उगाने पर भी विचार करें। किसान चेतावनी दे रहे हैं कि अगर निर्यात नीति जल्द नहीं बनी, तो अगले सीजन में भी घाटा बढ़ सकता है और उत्पादन का लाभ उन्हें नहीं मिल पाएगा।

किसानों की आशंका है कि लगातार घटते भाव और निर्यात की अनिश्चितता से आने वाले समय में आलू उत्पादन घाटे का ही कारण बनेगा, जिससे किसानों की आर्थिक स्थिति और कमजोर होगी। ऐसे में प्रशासन और केंद्र सरकार से त्वरित हस्तक्षेप और स्थिर निर्यात नीति की मांग जोर पकड़ रही है।

बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे हादसा: अज्ञात वाहन की टक्कर से युवक की मौत, परिवार में कोहराम

(जीएनएस)। औरैया। उत्तर प्रदेश के औरैया जिले में बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे के नीचे शनिवार देर शाम हुए एक सड़क हादसे में संजय कुमार नामक युवक की मौत ने पूरे गांव मलालपुर निगड़ा में शोक की लहर दौड़ा दी। दिल्ली में पेट्रोल पंप पर कार्यरत संजय कुछ दिनों के लिए अपने पैतृक गांव आया हुआ था। हादसे की सूचना मिलते ही परिजन और गांववासी घटनास्थल पर पहुंचकर हादसे की भयावहता को देख स्तब्ध रह गए।

प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, संजय कुमार शनिवार देर शाम मोटरसाइकिल से औरैया से अपने गांव लौट रहे थे। जैसे ही वह बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे के नीचे पहुंचे, किसी अज्ञात वाहन ने उनकी मोटरसाइकिल को टक्कर मार दी। जोरदार टक्कर के कारण संजय गंभीर रूप से घायल होकर सड़क पर गिर गए। आसपास मौजूद राहगीरों ने तुरंत पुलिस को सूचना दी और पुलिस की टीम ने घायल युवक को तुरंत औरैया जिला अस्पताल पहुंचाया।

डॉक्टरों ने प्राथमिक उपचार के बाद संजय की गंभीर स्थिति को देखते हुए उसे सैफई मेडिकल कॉलेज रेफर किया। परिजन एंबुलेंस के माध्यम से उसे ले जा रहे थे, लेकिन रास्ते में संजय की हालत और बिगड़ गई। तत्परता में उसे सीएचसी अजीतमल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। कोतवाल ललितेश त्रिपाठी ने घटना स्थल पर पहुंचकर पंचनामा भरवाया और शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पुलिस ने बताया कि अज्ञात वाहन चालक की तलाश जारी है और सदर कोतवाली द्वारा आगे की विधिक कार्रवाई की जाएगी। हादसे की खबर मिलते ही संजय की पत्नी पूजा, माता-पिता और परिजन अपने अपनों को खोने के दर्द से बेहाल हो गए। पूरे गांव में शोक का माहौल बना हुआ है और ग्रामीणों ने अज्ञात वाहन चालक के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग उठाई है। स्थानीय पुलिस ने बताया कि बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे पर हाल के महीनों में सड़क हादसों की संख्या बढ़ी है। उन्होंने कहा कि सुरक्षा उपायों को और कड़ा करने के लिए विशेष योजना बनाई जा रही है, ताकि भविष्य में ऐसे हादसों को रोका जा सके और राहगीरों व यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। यह दुर्घटना क्षेत्रवासियों और प्रशासन के लिए गंभीर चेतावनी है कि एक्सप्रेसवे पर सतर्कता बढ़ाने और नियमों का पालन करने की आवश्यकता है।

अहमदाबाद में साबरमती नदी के तट पर भव्य रूप से मनाया गया 'प्रमुख वरणी अमृत महोत्सव'

(जीएनएस)। गांधीनगर : बोचासणवासी अक्षर पुरुषोत्तम स्वामीनारायण संस्था (बीएपीएस) के प्रमुख के रूप में प्रमुख स्वामी महाराज को नियुक्त किए जाने के 75 वर्ष पूरे होने के अवसर पर रविवार को अहमदाबाद में साबरमती रिवरफ्रंट पर प्रमुख वरणी अमृत महोत्सव मनाया गया।

यह भव्य और दिव्य समारोह केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह, मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल और उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी की उपस्थिति में आयोजित हुआ।

इस अवसर पर केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि प्रमुख स्वामी महाराज के गुणों से जीवन का सार निकाला जा सकता है और जीवन के लिए उपयोगी बातें अपनाई जा सकती हैं।

उन्होंने कहा कि साबरमती नदी के तट पर भी प्रमुख स्वामी के जीवन के 75 गुणों को नौकाओं के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है, जो लोगों को जीवन जीने का मार्ग दिखाने का काम करता है।

श्री शाह ने कहा कि प्रमुख स्वामी महाराज के जीवन और योगदान की दृष्टि से देखें, तो उन्होंने एक ओर तो अध्यात्म और वैष्णव दर्शन को व्यापक बनाया, और व्यापक बनाने से भी बड़ा कार्य उसे व्यावहारिक बनाने का किया। उन्होंने भक्ति और सेवा, दोनों को एक-दूसरे के साथ जोड़कर 'नर में नारायण' के हमारे वेद वाक्य को बिना कुछ भी कहे चरितार्थ करने का काम किया है।

श्री शाह ने कहा कि प्रमुख स्वामी महाराज करुणा के माध्यम से दूसरे जीव का उद्धार करने की हमारी वर्षों पुरानी ऋषि संस्कृति को फैलाकर न केवल स्वामीनारायण संप्रदाय, बल्कि पूरे सनातन धर्म के लिए बहुत बड़ा काम किया है। उन्होंने सनातन धर्म के अनेक संप्रदायों में संत का तत्व संचित करने का काम कोई उपदेश दिए बिना ही किया और संत समाज की संन्यास व्यवस्था को सुदृढ़ किया।

श्री शाह ने कहा कि धीरे-धीरे समाज में भागवत श्रद्धा कम होते जा रही थी, तब प्रमुख स्वामी महाराज और उनके हजारों संतों ने अपने आचरण से सनातन धर्म के लिए संदेश फैलाकर उस श्रद्धा को पुनर्स्थापित किया है।

उन्होंने आगे कहा कि सनातन धर्म ने इतने हजारों वर्षों की यात्रा में अनेक संकटों का सामना किया। आजादी के बाद संत समाज और संन्यास व्यवस्था के प्रति समाज की श्रद्धा कम होना, यह सबसे बड़ा संकट था। इस संकट

से बाहर आने के लिए प्रमुख स्वामी महाराज ने उपदेश का एक भी शब्द कहे बिना, अपने और अपने अनुयायी संतों के आचरण के जरिए एक सुंदर मार्ग ढूंढ़ निकाला, जो आज सनातन धर्म के संन्यासियों के लिए मार्गदर्शक बन गया है।

श्री शाह ने साबरमती नदी के तट को संतों के समर्पण का साक्षी बताया। उन्होंने दधीचि ऋषि का उदाहरण दिया और कहा कि इसी साबरमती के तट से महात्मा गांधी ने सत्याग्रह के शस्त्र से देश को स्वतंत्रता दिलाई।

उन्होंने कहा कि इसी अहमदाबाद में आमलीवाळी पोळ (इमलीवाली पोल) में प्रमुख स्वामी महाराज ने प्रमुख पद की सेवा स्वीकार की और 1950 से 2016 तक उनके द्वारा किए गए सभी कार्य आज समग्र देश के सभी संप्रदायों के लिए उदाहरणीय बने हैं।

श्री शाह ने विश्वास व्यक्त किया कि आज के कार्यक्रम से आमलीवाळी पोळ न केवल गुजरात या भारत, बल्कि समग्र विश्व के लिए मुलाकात का अविस्मरणीय स्थान बनेगी। उन्होंने जोड़ा कि स्वामीनारायण संप्रदाय की विशेषता यह है कि इस कार्यक्रम की रचना संप्रदाय के गुणगान के लिए नहीं,

केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह, मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल और उपमुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी की उपस्थिति में दिव्य समारोह आयोजित

बीएपीएस प्रमुख महंत स्वामी महाराज ने आशीर्वचन दिए, प्रमुख स्वामी महाराज के प्रतिज्ञा पालन और परोपकार सहित कई गुणों का परिचय कराया

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह :-

प्रमुख स्वामी महाराज ने भक्ति और सेवा को एक-दूसरे के साथ जोड़कर 'नर में ही नारायण' के वेद वाक्य को चरितार्थ किया

प्रमुख स्वामी महाराज ने अपने आचरण से सनातन धर्म का संदेश फैलाकर धीरे-धीरे कम होती जा रही भागवत श्रद्धा को पुनर्स्थापित किया

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल :-

संतों के सान्निध्य में रहने से 'जो करता है, वह हरि करता है' का भाव और धर्मनिष्ठा के गुण आते हैं

बल्कि समाज की शिक्षा के लिए है और समाज के भीतर मौजूद अनेक प्रकार की बुराइयों को दूर करने के लिए की गई है। यह कार्यक्रम इस बात का बहुत बड़ा बोध बनने वाला है कि संत का जीवन कैसा होना चाहिए और संत जीवन से क्या सीखना चाहिए।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि इस समारोह से जब लोग जाएंगे, तब सेवकों की सेवा-निष्ठा के गुण लेकर जाएंगे। यहां उपस्थित कई लोगों ने सत्संग के गुण अपने जीवन में उतारे हैं, जो स्वयंसेवकों के सेवाभाव में स्पष्ट रूप से देखने को मिलते हैं। उन्होंने कहा कि इन हरिभक्तों में यह गुण प्रमुख स्वामी महाराज तथा अन्य संतों के सान्निध्य में रहने से आया है। पैसे लेकर काम करना हो, तो भी ऐसी सेवा लोगों से नहीं होती है, परंतु यहां लाखों ऐसे भक्त हैं, जो पैसे भी देते हैं और सेवा भी देते हैं। सेवकों में 'जे करे, ए हरि करे' (जो करता है, वह हरि करता है) का भाव है।

श्री पटेल ने समझाया कि सफलता मिले, तो लोग 'स्व' की वाहवाही करते हैं, जबकि विफलता में लोग हरि को याद करते हैं, लेकिन सच्चा मर्म यह है कि जो कुछ होता है, वह भगवान करते हैं। सत्संग का सार यह है कि जीवन का मर्म समझ में आए और संतों से ही वही समझना है।

इस अवसर पर विधायक तथा प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री जगदीश विश्वकर्मा ने कहा कि प्रमुख स्वामी महाराज का समग्र जीवन हमारे लिए गुणों के प्रेरणापुंज समान है, जिसका शब्दों में वर्णन कर पाना संभव नहीं है। अपनी हर सांस को लोक कल्याण के लिए समर्पित करने वाले प्रमुख स्वामी महाराज के व्यक्तित्व को समझने के लिए जीवन छोटा पड़ेगा। उन्होंने जोड़ा कि प्रमुख स्वामी महाराज के नाम स्मरण मात्र से ही अंतर में शांति स्थापित हो जाती है।

बोचासणवासी अक्षर पुरुषोत्तम स्वामीनारायण संस्था (बीएपीएस) के प्रमुख महंत स्वामी महाराज ने इस अवसर पर आशीर्वचन देते हुए कहा कि प्रमुख स्वामी महाराज ने प्रमुख होने के बावजूद जीवनभर दास भाव से सेवा ही की। उनके जीवन के गुण अनन्य हैं। महंत स्वामी ने अपनी युवावस्था की स्मृति ताजा करते हुए प्रमुख स्वामी महाराज के प्रतिज्ञापालन, परोपकार आदि गुणों का परिचय कराया।

इस समारोह में युवाओं द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियां की गईं। इस अवसर पर बीएपीएस के वरिष्ठ संत तथा हरिभक्त बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

भावनगर टर्मिनस स्टेशन यार्ड में पिट लाइन के कार्य हेतु ब्लॉक लिए जाने के कारण 12 दिसंबर से भावनगर मंडल की कुछ ट्रेनें प्रभावित होंगी

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल के भावनगर टर्मिनस स्टेशन यार्ड में पिट लाइन संख्या–2 के मरम्मत कार्य हेतु ब्लॉक लेकर जो गाड़ियां 8 दिसंबर, 2025 (सोमवार) से निरस्त की जानी थी उन्हें अब 12 दिसंबर, 2025 (शुक्रवार) से आगामी 45 दिनों तक के लिए निरस्त किए जाने का निर्णय लिया गया है। इस अवधि के दौरान ट्रेनों का निरस्तीकरण, शॉर्ट टर्मिनेशन/ओरिजिनेशन तथा पुनर्निर्धारण किया गया है। यात्रियों से अनुरोध है कि यात्रा से पूर्व संबंधित जानकारी अवश्य प्राप्त कर लें। भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार प्रभावित ट्रेनों का विस्तृत विवरण निम्नानुसार है:

निरस्त (Cancel) की जाने वाली ट्रेनें

1. ट्रेन नंबर 59228/59233 भावनगर–सुरेंद्रनगर–भावनगर पैसेन्जर दिनांक 12.12.2025 से 25.01.2026 तक कुल 45 दिन निरस्त रहेगी।
2. ट्रेन नंबर 59267/59268 भावनगर–पालिताना–भावनगर पैसेन्जर दिनांक 12.12.2025 से 25.01.2026 तक कुल 45 दिन निरस्त रहेगी।
3. ट्रेन नंबर 59269/59270 भावनगर–पालिताना–भावनगर पैसेन्जर दिनांक 12.12.2025 से 25.01.2026 तक कुल 45 दिन निरस्त रहेगी।
4. ट्रेन नंबर 59230 भावनगर–बोटाद पैसेन्जर दिनांक 12.12.2025 से 25.01.2026 तक कुल 45 दिन निरस्त रहेगी।
5. ट्रेन नंबर 59229 बोटाद-भावनगर पैसेन्जर दिनांक 13.12.2025 से 26.01.2026 तक कुल 45 दिन निरस्त रहेगी।
6. ट्रेन नंबर 59204/59271 भावनगर–बोटाद–भावनगर पैसेन्जर दिनांक 12.12.2025 से 25.01.2026 तक कुल 45 दिन निरस्त रहेगी।
7. ट्रेन नंबर 59235 धोला-महुवा पैसेन्जर दिनांक 12.12.2025 से 25.01.2026 तक कुल 45 दिन निरस्त रहेगी।
8. ट्रेन नंबर 59236 महुवा-धोला पैसेन्जर दिनांक 13.12.2025 से 26.01.2026 तक कुल 45 दिन निरस्त रहेगी।
9. ट्रेन नंबर 09529/09530 धोला–भावनगर–धोला टीओडी स्पेशल दिनांक 12.12.2025 से 25.01.2026 तक कुल 45 दिन निरस्त रहेगी।

पुनर्निर्धारित ट्रेनें (Rescheduled Trains)

1. ट्रेन नंबर 12972 (भावनगर–बान्द्रा टर्मिनस सुपरफास्ट) दिनांक 16.12.2025, 23.12.2025, 30.12.2025, 06.01.2026, 13.01.2026 और 20.01.2026 को अर्थात् प्रत्येक मंगलवार को 2 घंटा 30 मिनट विलंब से चलेगी।
2. ट्रेन नंबर 19271 (भावनगर–हरिद्वार एक्सप्रेस) दिनांक 18.12.2025, 25.12.2025, 01.01.2026, 08.01.2026, 15.01.2026 और 22.01.2026 को अर्थात् प्रत्येक गुरुवार को 3 घंटा विलंब से चलेगी।
3. ट्रेन नंबर 20966 (भावनगर–गांधीग्राम सुपरफास्ट इंटरसिटी) दिनांक 14.12.2025, 18.12.2025, 21.12.2025, 25.12.2025, 28.12.2025, 01.01.2026, 04.01.2026, 08.01.2026, 11.01.2026, 15.01.2026, 18.01.2026, 22.01.2026 और 25.01.2026 को अर्थात् प्रत्येक रविवार एवं गुरुवार को 30 मिनट विलंब से चलेगी।
4. ट्रेन नंबर 59558 (भावनगर–वेरावल पैसेन्जर) दिनांक 13.12.2025, 20.12.2025, 27.12.2025, 03.01.2026, 10.01.2026, 17.01.2026 और 24.01.2026 को अर्थात् प्रत्येक शनिवार को अपने निर्धारित समय से 3 घंटा विलंब से चलेगी।

शॉर्ट टर्मिनेशन/ओरिजिनेशन (Short Termination/Origination)

1. ट्रेन नंबर 19209 (भावनगर–ओखा एक्सप्रेस) दिनांक 13.12.2025 से 25.01.2026 तक प्रत्येक मंगलवार, बुधवार, शनिवार एवं रविवार को राजकोट स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी (सप्ताह में 4 दिन)। अर्थात् यह ट्रेन सप्ताह में तीन दिन सोमवार, गुरूवार और शुक्रवार को भावनगर टर्मिनस से चलकर ओखा तक जाएगी, बाकी दिन (मंगलवार, बुधवार, शनिवार एवं रविवार को) भावनगर से चलकर राजकोट तक जाएगी।
2. ट्रेन नंबर 19210 (ओखा–भावनगर एक्सप्रेस) दिनांक 14.12.2025 से 26.01.2026 तक प्रत्येक रविवार, सोमवार, बुधवार और गुरूवार को राजकोट स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट होगी (सप्ताह में 4 दिन)। यह ट्रेन रविवार, सोमवार, बुधवार और गुरुवार को राजकोट स्टेशन से प्रस्थान करेगी अर्थात् यह ट्रेन राजकोट से चलकर भावनगर तक जाएगी। बाकी तीन दिन मंगलवार, शुक्रवार एवं शनिवार को यह ट्रेन अपने निर्धारित समयानुसार ओखा से चलकर भावनगर तक जाएगी।

उल्लेखनीय है कि उपरोक्त किसी भी ट्रेन के समय में परिवर्तन नहीं किया गया है। उपरोक्त दोनों ट्रेनें अपने निर्धारित समयानुसार हीं चलेंगी।

उक्त सभी परिवर्तन 45 दिनों तक या पिट लाइन संख्या–2 के पूर्ण रूप से परिचालन में आने तक लागू रहेंगे। आम जनता को विभिन्न माध्यमों से इसकी व्यापक जानकारी दी जा रही है।

यात्रियों से अनुरोध है कि असुविधा से बचने के लिए यात्रा से पूर्व संबंधित स्टेशन अथवा रेलवे की आधिकारिक वेबसाइट www.enquiry.indianrail.gov.in से अद्यतन जानकारी प्राप्त करें।

पश्चिम रेलवे चलाएगी मुंबई सेंट्रल और नई दिल्ली के बीच स्पेशल ट्रेन

(जीएनएस)। यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए तथा यात्रा मांग को पूरा करने के उद्देश्य से, पश्चिम रेलवे द्वारा मुंबई सेंट्रल और नई दिल्ली के बीच विशेष किराये पर एक स्पेशल ट्रेन चलाने का निर्णय लिया गया है।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, इस स्पेशल ट्रेन का विवरण निम्नानुसार है:

ट्रेन संख्या 04003/04004 मुंबई सेंट्रल – नई दिल्ली सुपरफास्ट स्पेशल (02 फेरे)

ट्रेन संख्या 04003 मुंबई सेंट्रल – नई दिल्ली स्पेशल सोमवार, 08 दिसम्बर, 2025 को मुंबई सेंट्रल से 23:30 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 20:50 बजे नई दिल्ली पहुँचेगी। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 04004 नई दिल्ली – मुंबई सेंट्रल स्पेशल रविवार, 07 दिसम्बर, 2025 को नई दिल्ली से 22:40 बजे प्रस्थान करेगी और अगले दिन 21:00 बजे मुंबई सेंट्रल पहुँचेगी।

यह ट्रेन दोनों दिशाओं में बोरीवली, सूरत, वडोदरा, रतलाम, नागदा, कोटा तथा मथुरा स्टेशनों पर ठहरेगी।

इस ट्रेन में एसी 3-टियर (इकोनॉमी) कोचेस होंगे।

ट्रेन संख्या 04003 की बुकिंग सभी पीआरएस काउंटरों एवं आईआरसीटीसी वेबसाइट पर शुरू है। ट्रेनों के ठहराव, समय एवं संरचना से संबंधित विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने सशस्त्र सेना झंडा दिवस पर योगदान अर्पित किया

देश की रक्षा के लिए प्राण न्यौछावर करने वाले वीर जवानों के परिवारों के कल्याण के लिए अंशदान देकर कृतज्ञता व्यक्त की

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने रविवार को गांधीनगर में सशस्त्र सेना झंडा दिवस के अवसर पर योगदान अर्पित कर देश की सीमाओं और मातृभूमि की रक्षा करने वाले वीर जवानों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की है। उल्लेखनीय है कि देश की रक्षा के लिए समर्पित होकर अपने प्राणों का बलिदान देकर वीरगति को प्राप्त हुए सेना और सशस्त्र बलों के कर्तव्यनिष्ठ जवानों के परिवारों के कल्याण के लिए सात दिसंबर को सशस्त्र सेना

झंडा दिवस के अवसर पर सभी लोग स्वैच्छिक योगदान-अंशदान अर्पित कर उनकी सेवाओं का ऋण स्वीकार करते हैं।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने भी इस उद्देश्य से सशस्त्र सेना झंडा दिवस के अवसर पर अपना योगदान अर्पित किया।

इस अवसर पर सैनिक कल्याण और पुनर्वास बोर्ड के लेफ्टिनेंट कर्नल (सेवानिवृत्त) श्री कृष्णदीप सिंह सहित कई अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

रेलवे की ईमानदारी बनी यात्रियों का भरोसा: वेरावल स्टेशन पर लौटाया गया महिला यात्री का कीमती पर्स

(जीएनएस)। वेरावल रेलवे स्टेशन पर ईमानदारी, तत्परता एवं कर्तव्यनिष्ठा का एक सराहनीय उदाहरण सामने आया है । दिनांक 07.12.2025 (रविवार) को गाड़ी संख्या 22957 गांधीनगर कैपिटल–वेरावल "सोमनाथ एक्सप्रेस" में यात्रा कर रही एक महिला यात्री श्रीमती दिशा रूपारेलिया (कोच B3/46) का पर्स ट्रेन में छूट गया था, जिसे एक अन्य यात्री ने उस पर्स को लाकर वेरावल स्टेशन पर स्टेशन अधीक्षक के ओफिस में जमा करा दिया।

भावनगर रेलवे मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि यह पर्स उप स्टेशन अधीक्षक वेरावल श्री राजीव मिश्रा को जमा कराया गया था, जिसमें दो मोबाइल फोन, लगभग 5,000 नगद राशि एवं अन्य महत्वपूर्ण दस्तावेज व सामान मौजूद था। श्री मिश्रा द्वारा तत्परता दिखाते हुए तुरंत संबंधित यात्री से संपर्क कर पहचान सुनिश्चित की गई

तथा पर्स को सकुशल लौटा दिया गया। पर्स मिलने पर महिला यात्री ने उप स्टेशन अधीक्षक श्री राजीव मिश्रा की सजगता, ईमानदारी एवं त्वरित कार्रवाई की भूरी-भूरी प्रशंसा करते हुए रेलवे प्रशासन के प्रति आभार व्यक्त किया।

मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने कहा कि भावनगर रेल मंडल ऐसे कर्तव्यनिष्ठ रेल कर्मियों के कार्यों की सराहना करता है, जो यात्रियों में रेलवे के प्रति विश्वास को और मजबूत करते हैं।

नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं का ऋण जारी MNRE ने रोकने की खबरों का किया खंडन

(जीएनएस)। नई दिल्ली। नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (MNRE) ने रविवार को स्पष्ट किया कि उसने वित्तीय संस्थाओं को नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं या उपकरण निर्माण इकाइयों के लिए ऋण रोकने का कोई निर्देश नहीं दिया है। यह स्पष्टीकरण मीडिया में फैली उन खबरों के बाद आया है, जिसमें दावा किया गया था कि अत्यधिक क्षमता की चिंताओं के कारण मंत्रालय ने ऋणदाताओं को नई वित्तीय सहायता रोकने की सलाह दी है। मंत्रालय ने इन खबरों को पूरी तरह गलत बताते हुए कहा कि नवीकरणीय ऊर्जा के विकास में कोई भी बाधा नहीं डाली जा रही है।

मंत्रालय ने बताया कि भारत ने अपनी स्थापित विद्युत क्षमता का 50 प्रतिशत गैर-जीवाश्म ईंधन स्रोतों से हासिल कर लिया है, जो पेरिस समझौते के तहत निर्धारित लक्ष्य से पांच साल पहले पूरा हुआ। 31 अक्टूबर 2025 तक, गैर-जीवाश्म स्रोतों से स्थापित क्षमता लगभग 259 गीगावाट थी, जिसमें वित्त वर्ष 2025-26 में अक्टूबर तक 31.2 गीगावाट की वृद्धि दर्ज

की गई। यह आंकड़ा स्पष्ट करता है कि भारत की नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में तेजी बनी हुई है और आगे भी बढ़ती रहेगी।

MNRE ने यह भी कहा कि वह सौर ऊर्जा विनिर्माण तंत्र को मजबूत करने के लिए निरंतर नीतिगत समर्थन, बुनियादी ढांचे का विकास और नवाचार सुनिश्चित करता रहेगा। मंत्रालय ने हितधारकों के साथ संवाद जारी रखने का भरोसा दिया ताकि भारत की सौर ऊर्जा यात्रा समावेशी, प्रतिस्पर्धी और भविष्य के लिए तैयार बनी रहे। विशेषज्ञों का कहना है कि यह कदम निवेशकों और निर्माताओं को भरोसा दिलाने के साथ-साथ देश के नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्य को समय से पहले हासिल करने में मदद करेगा।

मंत्रालय ने निवेशकों से अपील की है कि वे परियोजनाओं और उपकरण निर्माण में निवेश करने से पीछे न हटें, क्योंकि सरकारी नीति और वित्तीय समर्थन पूरी तरह से जारी रहेगा। यह घोषणा भारतीय नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में निवेशकों के लिए सकारात्मक संकेत के रूप में देखी जा रही है और इसके जरिए देश की ऊर्जा सुरक्षा और कार्बन उत्सर्जन में कमी लाने की दिशा में भी मजबूती आई है।

मीरजापुर में मां-बेटी ने कीटनाशक पीकर दी अंतिम सांस, परिवार में मातम

(जीएनएस)। मीरजापुर। उत्तर प्रदेश के मीरजापुर जिले के विंध्याचल थाना क्षेत्र के तिलई मौआर गांव में शनिवार शाम एक दर्दनाक घटना ने पूरे गांव को शोक में डुबो दिया। घर के अंदर हुई इस घटना में रंजना देवी (38) ने पहले अपनी छह वर्षीय बेटी आस्था को कीटनाशक पिलाया और फिर खुद वह कीटनाशक पी ली। दोनों को तत्काल वाराणसी के ट्रॉमा सेंटर ले जाया गया, लेकिन रात करीब 11 बजे इलाज के दौरान मां-बेटी ने दम तोड़ दिया। घटना की जानकारी बड़ी बेटी अतिस्था (12) ने दी। अतिस्था ने बताया कि मां ने उसे भी कीटनाशक पीने के लिए मजबूर किया, लेकिन वह डरकर वहां से भाग निकली। भागते समय उसने देखा कि मां ने भी कीटनाशक पी लिया था। अतिस्था लगभग 500 मीटर दूर अपने दादा मटर पटेल के पास पहुंची और रोते हुए घटना की सूचना दी। परिजन तुरंत घर पहुंचे और देखा कि रंजना देवी और छोटी बेटी आस्था के मुंह से झाग निकल रहा था। दोनों को पहले पीएचसी सरोई ले

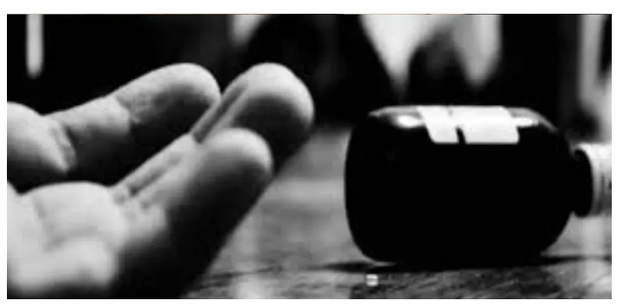

जाया गया, लेकिन हालत गंभीर होने पर मंडलीय अस्पताल रेफर किया गया। वहां भी स्थिति नाजुक होने पर उन्हें वाराणसी ट्रॉमा सेंटर भेजा गया।

परिवार के अनुसार, रंजना देवी और उनके पति बालेंद्र पटेल के बीच पिछले कुछ समय से अनबन चल रही थी। बच्चों ने बताया कि पिता बालेंद्र 29 नवंबर को सूरत, गुजरात गए थे। घटना से पूरे परिवार और गांव में मातम पसरा हुआ है। थाना प्रभारी वेदप्रकाश पांडेय ने बताया कि कीटनाशक पीने से मां-बेटी की मौत हुई है। परिवारजन मृतक पति के आने का इंतजार कर रहे हैं, जिसके बाद आगे की विधिक कार्रवाई की जाएगी। गांववासी इस घटना से स्तब्ध हैं और इसे परिवारिक तनाव और मानसिक स्वास्थ्य के गंभीर परिणाम के रूप में देख रहे हैं। स्थानीय प्रशासन और पुलिस ने गांव में स्थिति को नियंत्रित करते हुए परिजनों को सहायता देने की कोशिश की है। यह घटना न केवल मीरजापुर बल्कि पूरे क्षेत्र के लिए चेतावनी है कि मानसिक तनाव और पारिवारिक कलह को हल करने के लिए समय रहते कदम उठाना कितना जरूरी है।

स्मृति मंधाना और पलाश मुच्छल की शादी रद्द, दोनों ने इंस्टाग्राम पर दी आधिकारिक पुष्टि

(जीएनएस)। भारतीय महिला क्रिकेट टीम की उपकप्तान स्मृति मंधाना और संगीतकार पलाश मुच्छल की शादी अब आधिकारिक रूप से रद्द कर दी गई है। रविवार को दोनों ने अपनी-अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी के माध्यम से इस पर चल रही तमाम तरह की अटकलों का अंत कर दिया। महीनों से सोशल मीडिया पर चर्चाओं और अनुमान का दौर जारी था, लेकिन अब पहली बार दोनों ने एक स्पष्ट बयान देकर स्थिति साफ कर दी है।

स्मृति मंधाना ने अपने बयान में लिखा कि शादी को रद्द करने का निर्णय पूरी तरह निजी है और इससे जुड़े दोनों परिवारों की निजता का सम्मान किया जाना चाहिए। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि फिलहाल उनका पूरा ध्यान भारतीय क्रिकेट के आगामी कार्यक्रमों और देश के लिए सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन देने पर केंद्रित रहेगा। मंधाना का यह संदेश साफ संकेत देता है कि वे व्यक्तिगत जीवन की किसी भी उथल-पुथल से अलग होकर अपने करियर पर पूरी तरह फोकस करना चाहती हैं।

उधर, संगीतकार पलाश मुच्छल ने भी इंस्टाग्राम पर एक भावनात्मक पोस्ट साझा किया। उन्होंने कहा कि वे अपने निजी रिश्तों से थोड़ा दूरी बनाकर आगे बढ़ने का फैसला कर रहे हैं। साथ ही उन्होंने सोशल मीडिया पर फैल रही अपुष्ट और भ्रामक खबरों के प्रति चेतावनी दी और इस मामले में अफवाह फैलाने वालों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई का संकेत भी दिया।

स्मृति और पलाश की शादी 23 नवंबर 2025 को तय थी, लेकिन मंधाना के पिता की तबीयत बिगड़ने के बाद इसे स्थगित कर दिया गया था। इसी स्थगन ने कई तरह की अफवाहों को जन्म दिया था—कभी संबंधों में खटास की बात, कभी परिवारों में मतभेद और कभी पूरी शादी टूटने के दावे। हालांकि, अब दोनों के आधिकारिक बयानों ने इन सभी अटकलों पर विराम लगा दिया है।

यह घोषणा भले ही प्रशंसकों के लिए निराशाजनक हो, लेकिन दोनों ने अपने करियर और निजी जीवन की गरिमा बनाए रखने की अपील की है। खेल और संगीत की इन दो प्रमुख हस्तियों ने जिस संयम के साथ अपनी बात रखी, उससे यही संदेश मिलता है कि जीवन के हर मोड़ पर सम्मान और संतुलन बनाए रखना ही सबसे महत्वपूर्ण होता है।